

बाल विज्ञान पत्रिका, अक्टूबर 2023

चकमक

जब-जब जाते गाँव में

वीरन्द्र दुबे

जब-जब जाते गाँव में
घूमा करते नाव में।
दौड़ा करते जरा ना थकते
चाक लगाते पाँव में।
धूप लगी तो सुस्ता लेते
अमराई की छाँव में।
उनकी-इनकी सबकी बातें
जमा करीं जो बक्सों में
कौन कहाँ पर छोड़ी हैं
ढूँढा करते नक्शों में।

मेरा पन्ना विशेषांक

नवम्बर-दिसम्बर 2023



तुम्हीं बनाओ

फिल्म चर्चा

किताबें कुछ कहती हैं...

तुम भी जानो

माथापच्ची



पहेली
चित्र

चकमक

तुम जानते ही हो कि चकमक का नवम्बर अंक विशेषांक होता है। इस बार विशेषांक के साथ यह नवम्बर और दिसम्बर माह का संयुक्त अंक भी होगा। यानी इस अंक में तुम्हारी रचनाओं के ढेर सारे पन्ने होंगे। तो इस अंक के लिए तुम्हें खास तौर से अपनी रचनाएँ भेजनी हैं।

अपनी खुद की रची कहानी, कविताओं, किस्सों, लेखों, चित्रों, चुटकुले, पेंटिंग व कॉमिक के साथ-साथ तुम चकमक के अन्य कॉलम जैसे माथापच्ची, चित्रपहेली, तुम भी बनाओ, अन्तर ढूँढो, तुम भी जानो के लिए भी रचनाएँ भेज सकते हो। इनके अलावा तुम दिए गए किसी भी विषय पर अपनी रचना गढ़ सकते हो।

किस्से-कहानियों-कविताओं या चित्र अथवा कॉमिक के रूप में तुम्हारी रचनाओं के लिए कुछ विषय ये रहे:

- अपने घर या आसपास के बड़े-बूढ़ों से बात करके तुम अपने क्षेत्र की लोककथाओं के बारे में पता कर सकते हो।
- अपना या अपने किसी भी पसन्दीदा व्यक्ति या जानवर का पोर्ट्रेट। पोर्ट्रेट का चित्र खड़े पन्ने  में बनाना, आड़े  में नहीं।
- एक चिट्ठी – यदि तुम किसी को भी याद करते हो और उनसे कुछ कहना चाहते हो, तो उन्हें तुम चिट्ठी लिख सकते हो। वो कोई भी हो सकते हैं – दूर चले गए दोस्त या रिश्तेदार, कोई जगह या कोई मौसम या गुजरा हुआ वक्त, जिसे तुम कुछ कहना चाहो।

रचना के साथ अपना नाम, कक्षा या उम्र व अपना पता जरूर लिखना।

रचनाएँ भेजने की अन्तिम तारीख है -15 अक्टूबर

रचनाएँ तुम 9753011077 पर व्हाट्सएप कर सकते हो या फिर merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल भी कर सकते हो।

चकमक

इस बार



जब-जब जाते गाँव में- वीरेन्द्र दुबे	1
जीवजगत में सममिति - उमा सुधीर	4
अन्तर ढूँढो	8
कला के आयाम - शेफाली जैन	9
कविता-डायरी - 5 - ऐ भाई... - सुशील शुक्ल	14
गणित है मज़ेदार - चित्रों के ज़रिए गुणा - भाग 2	
- आलोका कान्हेरे	16
जंगली - वेलेंटीना त्रिवेदी	20

बेतवा नदी के किनारे... - भाग 4 - आस्था चौधरी	22
खाई है तो खाई है - वीरेन्द्र दुबे	27
क्यों-क्यों	28
चित्रपहेली	32
अमन की कुछ बातें - गुट सोच... - अमन मदान	34
माथापच्ची	36
मेरा पन्ना	38
तुम भी जानो	43
तब और अब - रोहन चक्रवर्ती	44



आवरण: प्रोइति रॉय

सम्पादक	डिज़ाइन
विनता विश्वनाथन	कनक शशि
सह सम्पादक	डिज़ाइन सहयोग
कविता तिवारी	इशिता देबनाथ बिस्वास
विज्ञान सलाहकार	सलाहकार
सुशील जोशी	सी एन सुब्रह्मण्यम्
उमा सुधीर	शशि सबलोक
वितरण	
ज्ञानक राम साहू	

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

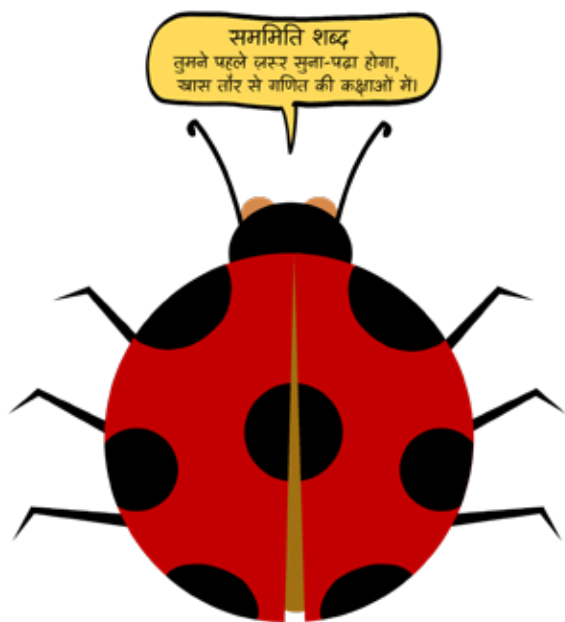
वेबसाइट: <https://www eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>चन्दा (एकलव्य फाउण्डेशन के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।



जीवजगत में सममिति

उमा सुधीर

अनुवाद: सुशील जोशी

चित्र: मधुश्री

सममिति के आधार पर जन्तुओं को तीन किस्मों में बाँटा जा सकता है – एक वे जिनमें कोई सममिति नहीं होती (यहाँ इनमें हमारी रुचि नहीं है), दूसरे वे जिनमें सिर्फ एक सममिति तल होता है और तीसरे वे जिनमें कई सममिति तल होते हैं।

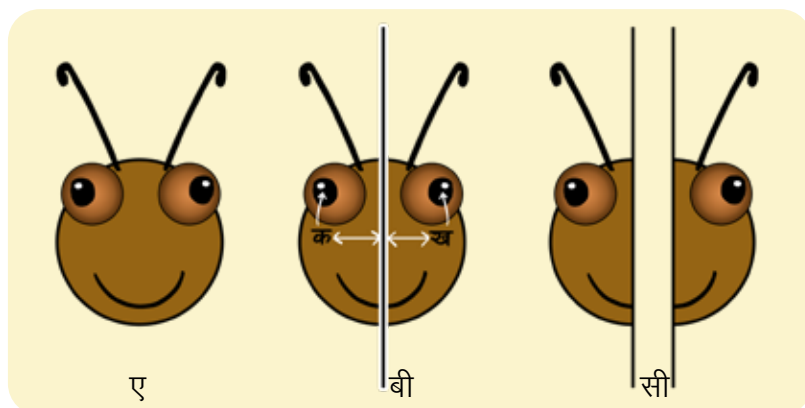
जीव वैज्ञानिकों के बारे में जल्द ही तुम्हें एक बात पता चलेगी। वे एक विचित्र बीमारी से पीड़ित होते हैं। यह एक ऐसी बीमारी है जो उन्हें हरेक चीज़ का नाम रखने पर मजबूर कर देती है (भले ही वे उस चीज़ को न समझते हों)। तो, एक सममिति तल

वाले जन्तुओं को जीव वैज्ञानिक द्विपक्षीय सममित (bilaterally symmetric) कहते हैं, जबकि कई सममिति तल वाले जन्तुओं को त्रिज्यात सममित (radially symmetric) कहते हैं। ये शब्द थोड़े अजीब लगते हैं। लेकिन ये सुन्दरता का भान भी कराते हैं।



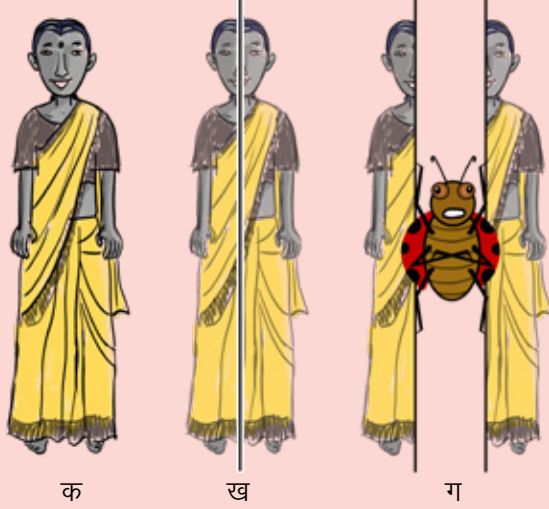
क्या है द्विपक्षीय सममिति?

पहले द्विपक्षीय सममिति को देखते हैं। चित्र 1-ए में दर्शाए गए खुशनुमा चेहरे को देखो। अब इसी चेहरे को चित्र 1-बी में देखो। हम देख सकते हैं कि यदि हम चेहरे के ठीक बीच से एक रेखा खींचें तो चेहरा दो बराबर भागों में बँट जाएगा। इन दो भागों में आँखें (क और ख) मध्य रेखा से बराबर-बराबर दूरियों पर हैं। 'द्विपक्षीय सममिति' जैसे भारी-भरकम शब्द के पीछे यही सरल-सी बात छिपी है।



चित्र 1: द्विपक्षीय सममिति का एक उदाहरण।

चित्र 2: सिर्फ पोशाक पर ध्यान दें तो असममिति।

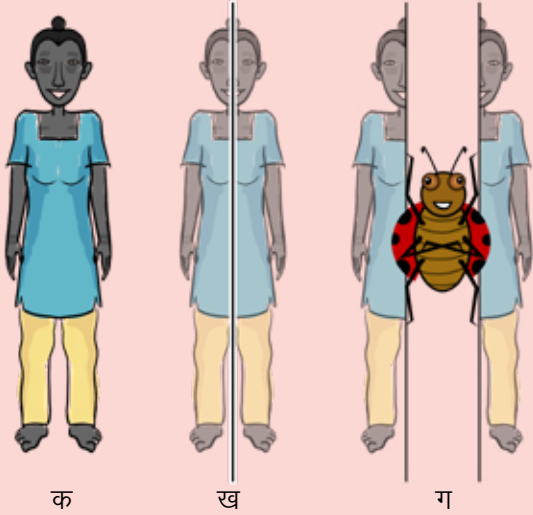


द्विपक्षीय रूप से सममित है। लेकिन साड़ी पहनी महिला के मामले में ऐसा नहीं है - उसका बायाँ हिस्सा दाएँ हिस्से जैसा तो बिल्कुल नहीं दिखता।



चित्र 4

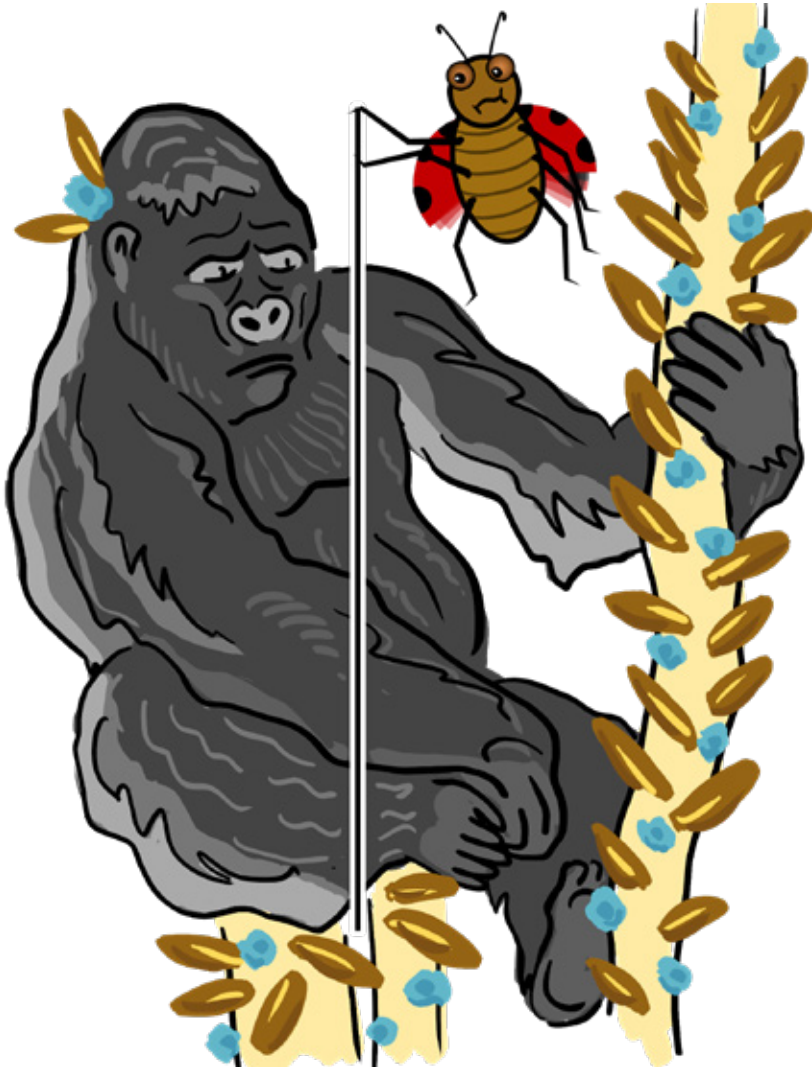
चित्र 3: दर्पण सममिति।



चलो, इसे थोड़ा और बारीकी-से देखते हैं। इन दो महिलाओं को देखो (चित्र 2 व 3)। यदि तुम दोनों महिलाओं के सिर से पैर तक एक लकीर खींचो, तो क्या दिखता है? सलवार-कमीज़ वाली महिला का बायाँ भाग हूबहू दाएँ भाग जैसा दिखता है। इसे दर्पण सममिति (mirror symmetry) भी कहते हैं। क्योंकि यदि हम महिला के चित्र को दो भागों में बाँटने वाली लकीर पर एक दर्पण खड़ा कर दें, तो दर्पण में जो प्रतिबिम्ब बनेगा वह दूसरे आधे हिस्से के समान होगा। तो हम कहते हैं कि सलवार-कमीज़ वाली महिला

मनुष्यों में सममिति

तो क्या मनुष्य द्विपक्षीय सममित होते हैं? लगता तो है कि साड़ी वाली महिला को द्विपक्षीय सममित नहीं कहा जा सकता। लेकिन जीव वैज्ञानिक बाहरी आडम्बरों की परवाह नहीं करते। कारण है कि एक ही महिला एक दिन साड़ी पहनकर और अगले दिन सलवार-कमीज़ पहनकर आ सकती है। और किसी दिन स्कर्ट-ब्लाउज़ पहनकर भी आ सकती है (एक बार फिर द्विपक्षीय सममित)। तो हाँ, मनुष्य जन्तुओं के उस समूह में आते हैं जो द्विपक्षीय सममित हैं। और थोड़ा बारीकी-से देखें? इस बन्दे को देखो (चित्र 5)।



चित्र 5: द्विपक्षीय सममिति का एक और उदाहरण।

पहली नज़र में तो यह सममित नहीं लगता है, लेकिन ध्यान दो कि ऊपर के चित्रों में महिला की पोशाकों की ही तरह इसके बैठने का ढंग बदल सकता है। तो, यह खूबसूरत व्यक्ति भी द्विपक्षीय सममित है।

यदि तुम अपने आसपास दिखने वाले जन्तुओं-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, मछलियाँ, मकड़ियाँ, कृमि को देखोगे तो पाओगे कि ये सब द्विपक्षीय सममित हैं।

जीवों में त्रिज्यात सममिति

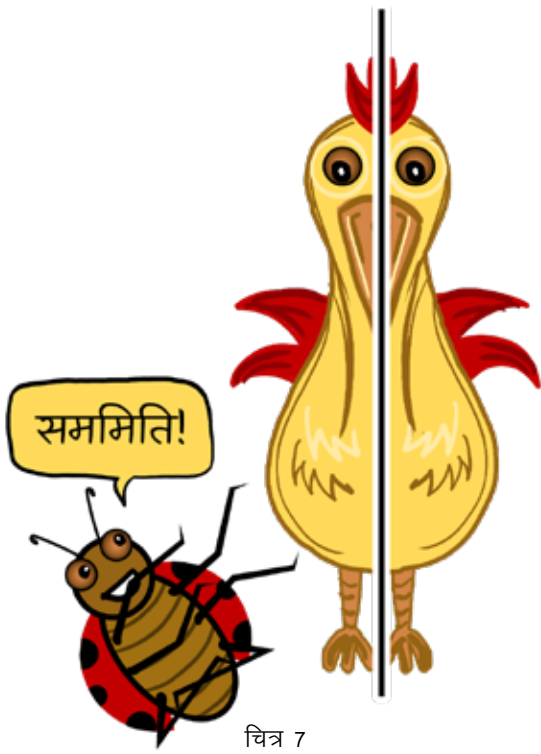
इस बात की सम्भावना बहुत कम है कि तुमने ऐसा कोई जन्तु देखा हो जिसे त्रिज्यात सममित कहा जा सके। ऐसा इसलिए है क्योंकि लगता तो है कि हमारे आसपास भरपूर विविधता है, लेकिन असली विविधता तो समन्दरों और महासागरों में बिखरी है। और त्रिज्यात सममिति का सबसे बढ़िया उदाहरण तारा मछली (स्टारफिश) में दिखता है। यह वास्तव में मछली नहीं है लेकिन समुद्र में पाई जाती है और सितारे जैसी दिखती है, इसलिए इसे तारा मछली कहते हैं।

सवाल है कि इसे त्रिज्यात सममित क्यों कहते हैं। बात यह है कि इसमें कई सारे सममिति तल होते हैं - तुम देख ही सकते हो कि ऐसी कई रेखाएँ खींची जा सकती हैं जो इस जन्तु को दो बराबर हिस्सों में बाँट देंगी। किसी भी भुजा के सिरे से शुरू करो और एक लकीर खींचो जो तीसरी और चौथी भुजा के बीच की धँसान से गुज़रे। अब इस रेखा पर एक दर्पण रखकर देखो। तुम पाओगे कि एक भाग का दर्पण प्रतिबिम्ब तारा मछली के दूसरे आधे भाग जैसा ही होगा।

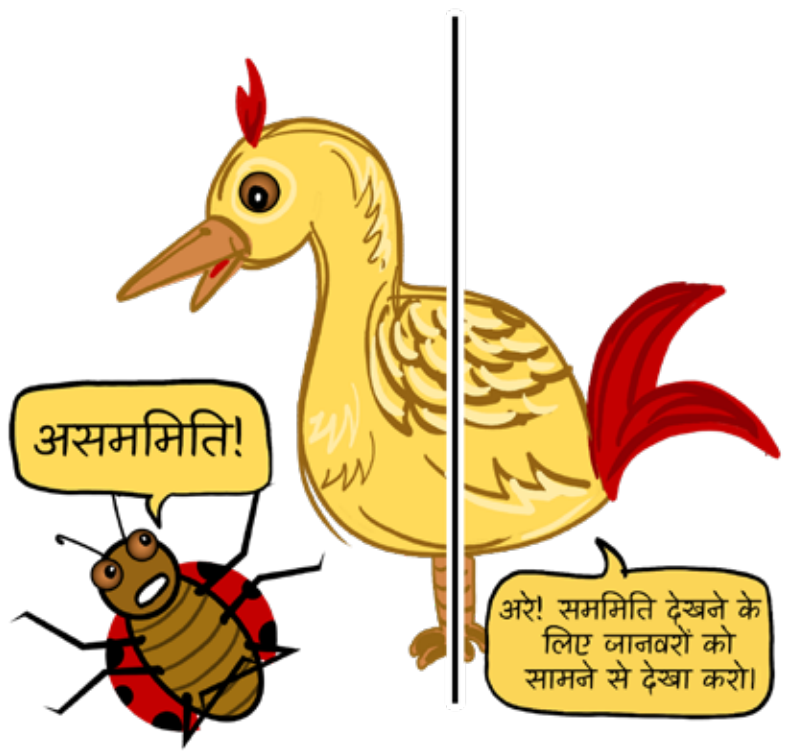
देखो कि क्या तुम्हें अन्य त्रिज्यात सममित जन्तु मिलते हैं।



चित्र 6: त्रिज्यात सममिति।



चित्र 7

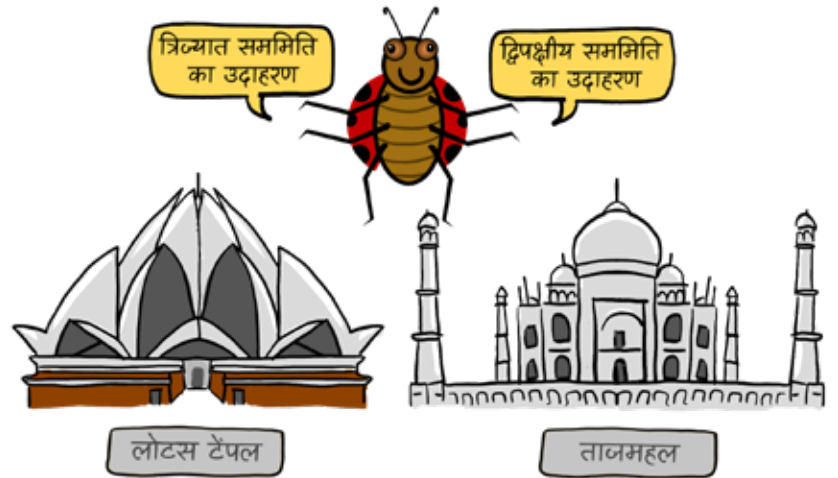


आसपास की चीज़ों में सममिति

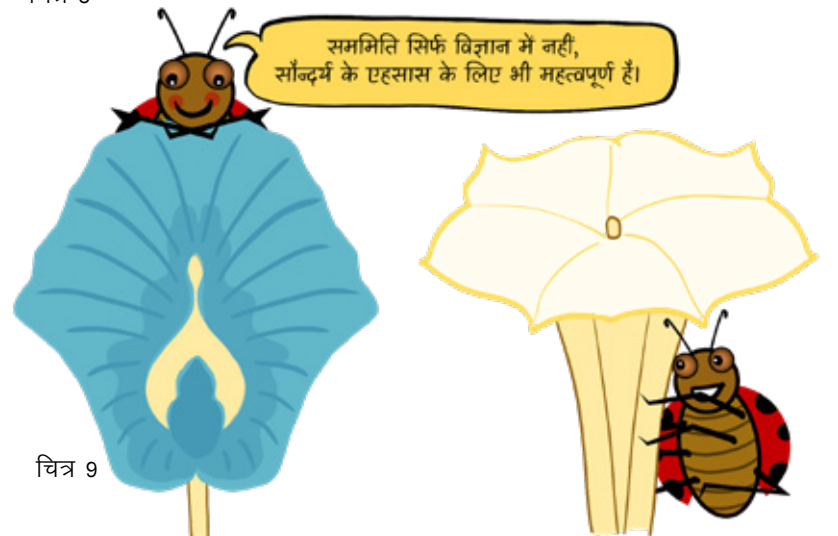
हालाँकि द्विपक्षीय सममित और त्रिज्यात सममित शब्दों का उपयोग जन्तुओं के सन्दर्भ में ही किया जाता है। लेकिन ऐसी सममितियाँ हमें अन्य जगहों पर भी देखने को मिल सकती हैं। जैसे कि दिल्ली का लोटस टेंपल त्रिज्यात सममित है, जबकि आगरा का ताजमहल द्विपक्षीय सममित है (चित्र 8)।

यदि तुम सममिति देखने इतनी दूर जाना नहीं चाहते तो कुछ फूलों को ही देख लेते हैं। शंखपुष्पी के फूल द्विपक्षीय सममित होते हैं, जबकि धतूरे के फूल त्रिज्यात सममित। ज़रा खोजबीन करो कि अन्य फूलों में किस तरह की सममिति है।

कहते हैं कि सुन्दरता तो देखने वाले की आँखों में होती है और आम तौर पर इस सुन्दरता का फैसला इस आधार पर किया जाता है कि कोई चीज़ कितनी सममित है। कहने का मतलब है कि सममिति सिर्फ विज्ञान में नहीं, सौन्दर्य के एहसास के लिए भी महत्वपूर्ण है।



चित्र 8



चित्र 9

इन दो चित्रों में दस से ज्यादा अन्तर हैं। तुमने कितने ढूँढ़े?

हूँदो अन्तर

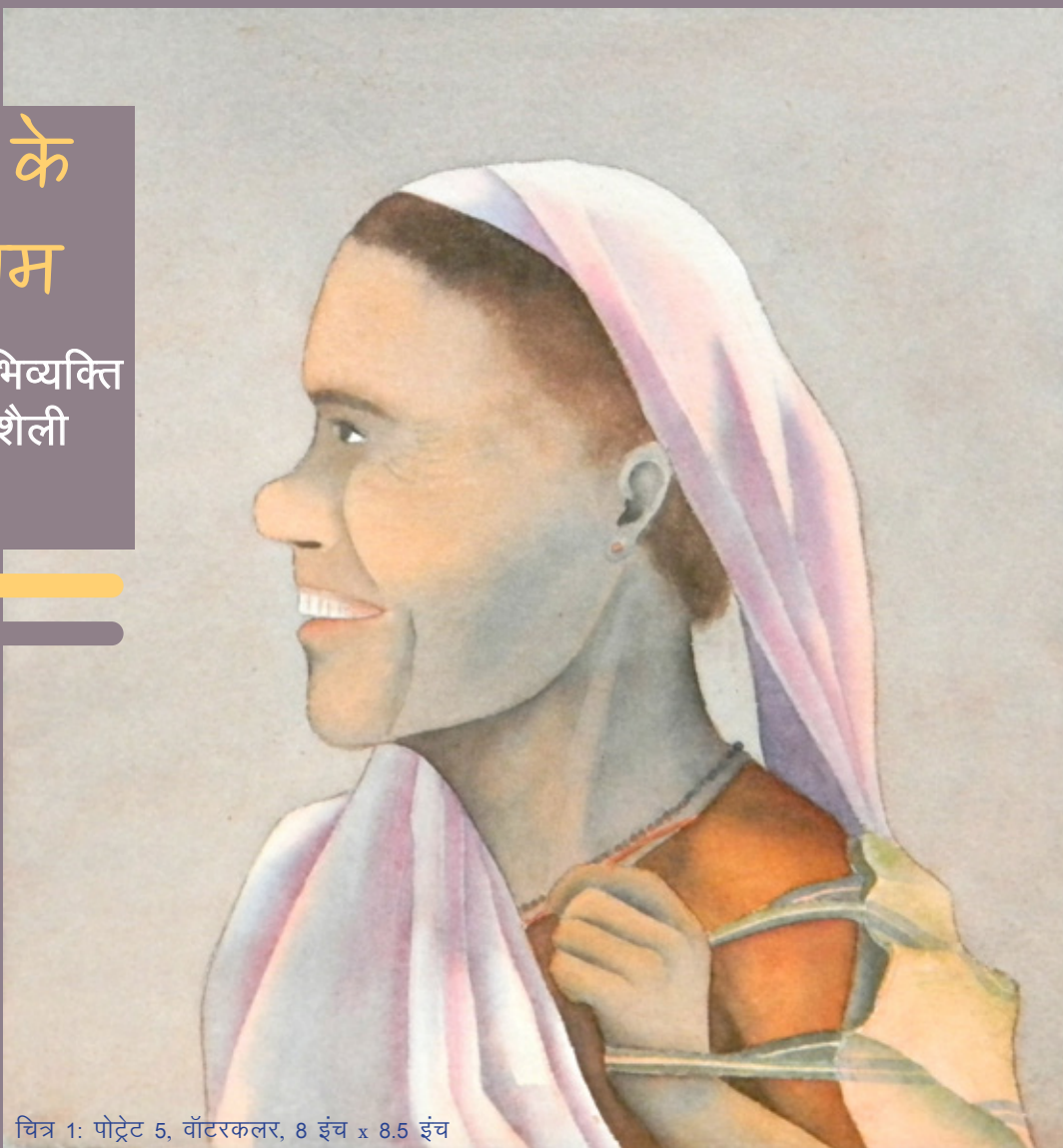
चित्र: पिनकी खाम्बलार्ड, सातवीं, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, वेकरो, अरुणाचल प्रदेश



कला के आयाम

पोट्रेट – अभिव्यक्ति
की एक शैली

शेफाली जैन



चित्र 1: पोर्ट्रेट 5, वॉटरकलर, 8 इंच x 8.5 इंच

मैं कलाकार राजू पटेल से पहली बार बड़ौदा में मिली। राजू भाई की तरह मैंने भी कला की पढ़ाई एम.एस. यूनिवर्सिटी, बड़ौदा से ही की है। उस दौरान, खासकर कला की पढ़ाई खतम होने के बाद, मैं अपनी कला की दिशा और विषयवस्तु को लेकर कुछ सवालों से जूझ रही थी। राजू भाई के आर्टवर्क उस समय मुझ पर एक गहरी छाप छोड़ गए थे। तब वे कला के माध्यम से विकलांगता (disability) पर अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। खैर, वह ठहरी तब की बात। फिर बड़ौदा छूट गया, पर बड़ौदा में बने दोस्त नहीं छूटे।

हम लोग अक्सर सोशल मीडिया पर एक-दूसरे के काम को फॉलो करते हैं। कुछ समय पहले मैं फिर से राजू भाई के आर्टवर्क गौर-से देखने लगी। उस वक्त वे कुछ वॉटरकलर पोर्ट्रेट बना रहे थे। इन पोर्ट्रेट के बारे में उत्सुकता तो थी ही और काफी साल से राजू भाई से बात भी नहीं हुई थी। इसलिए मैंने उनसे फोन पर बातचीत करने की ठान ली। बातचीत के दौरान मैंने उनसे उनके नए पोर्ट्रेट के बारे में पूछा। “कौन हैं ये लोग?” “आप इनके पोर्ट्रेट क्यों बना रहे हैं?” जैसी बातों के अलावा भी बहुत सारी बातें हुईं। उनसे हुई बातों को मैं अपने विचारों के साथ तुमसे साझा कर रही हूँ। पर इससे पहले मैं तुम्हें पोर्ट्रेट के इतिहास के बारे में कुछ बताना चाहती हूँ।

बदलती हुई कला

पोट्रेट एक तरह की चित्रशैली है जिसमें किसी व्यक्ति-विशेष की पहचान कला के माध्यम से प्रतिबिम्बित की जाती है। ऐसा मूर्तिकला, चित्रकला, फोटोग्राफी या डिजिटल माध्यम से किया जा सकता है। उन्नीसवीं सदी के पहले पोट्रेट ज्यादातर धनवान लोगों, ऊँचे ओहदे वालों या फिर किसी जानी-मानी हस्ती के ही बनाए जाते थे। मसलन मुगल लघुचित्र शैली में अकबर, जहाँगीर जैसे बादशाहों के पोट्रेट। या फिर तानसेन जैसे महान संगीतज्ञ का पोट्रेट और यूनानी मूर्तिकला में जाने-माने दार्शनिक सुकरात का पोट्रेट। इसके कई कारण थे। चूँकि ये पोट्रेट राजा या फिर सेठ के लिए काम करने वाले कलाकार बनाते थे, इसलिए उन्हें वही बनाना पड़ता था जो मालिक को पसन्द हो। तब चित्रकारी की सामग्री भी काफी महँगी होती थी और आम लोगों के पास अपना पोट्रेट बनवाने के लिए पैसे नहीं होते थे।

उन्नीसवीं शताब्दी में जब कलाकारों ने स्वतंत्र रूप से काम करना शुरू किया, तब आम लोगों के पोट्रेट बनने लगे। मैरी कैसट ने अपने आसपास की महिलाओं और बच्चों के पोट्रेट बनाने शुरू किए। उन्होंने अखबार पढ़ती महिलाओं, बच्चों को नहलाती महिलाओं वगैरह के पोट्रेट बनाए। बीसवीं शताब्दी के ऐसे ही एक कलाकार हैं भूपेन खक्खर। उन्होंने अपने दोस्तों के, गली के टेलर के, घड़ीसाज़ के पोट्रेट बनाने का निर्णय लिया। आज तो, खासकर फोटोग्राफी के आविष्कार के बाद, आम लोगों को

भी अपनी पोट्रेट खिंचवाने का ज़रिया मिल गया है। मोबाइल फोन आने से 'सेल्फी' या फिर सेल्फ-पोट्रेट काफी आम बात हो गई है। लेकिन कुछ और भी मसले हैं जिनके कारण आज भी आम लोगों को पोट्रेट का हकदार नहीं समझा जाता। पहले सेठ-साहूकार कला के मालिक थे, तब उनकी पसन्द से पोट्रेट का विषय चुना जाता था। आजकल उनकी जगह कला वीथियों, संग्रहालयों, संस्थाओं ने ले ली है। ये भी कला के विषय के चुनाव पर हावी हो सकती हैं। हालाँकि आसान नहीं है, लेकिन फिर भी आज कलाकार का स्वतंत्र तरीके से काम कर पाना और अपनी कला की विषयवस्तु खुद तय कर पाना पहले से तो ज़्यादा मुमकिन है।

राजू भाई के पोट्रेट के किरदार

बातचीत के दौरान राजू भाई ने बताया कि उनके पोट्रेट में जो लोग हैं वे उनके गाँव के जान-पहचान वाले मज़दूर आदिवासी हैं। जैसे कि किसान, बैँधुआ मज़दूर, रेड़ी वाले, सब्जी वाले, ईंट की भट्टी पर काम करने वाले, दातुन बेचने वाले, बाँस की टोकरियाँ बनाने वाले, करतब दिखाने वाले वगैरह। तो ज़ाहिर है कि राजू भाई किसी सेठ-साहूकार या



चित्र 2: एग्रीकल्चर टूल सेलर



चित्र 3: अनटाइटल्ड 1, वॉटरकलर, 26 इंच x 40 इंच

फिर बड़ी हस्ती का पोर्ट्रेट नहीं बनाना चाहते। वे आम लोगों में दिलचस्पी रखते हैं। वे लोग, जिनसे वे परिचित हैं, जो उनके समुदाय से हैं। इनकी दिनचर्या, मेहनत और चुनौतियों से राजू

भाई अच्छी तरह से वाकिफ हैं और वे चाहते हैं कि इन लोगों की विस्तृत और संवेदनशील पहचान को वे पोर्ट्रेट में ढालें और दूसरों तक पहुँचाएँ।

राजू भाई ने यह भी बताया कि उन्हें फोटोग्राफी का शौक है। वे जब भी अपने गाँव जाते हैं तो वहाँ के रोज़मर्रा के जीवन की फोटोग्राफी करते हैं। उनके इंस्टाग्राम अकाउंट पर मैंने ऐसे बहुत-से फोटोग्राफ देखे – जैसे कि गाँव के हाट में सामान बेचते लोग (चित्र 4), धान कूटती महिलाएँ, बेंत की चटाई बनाती छोटी लड़की, पत्थर की खलनी-कूटा बनाता हुआ कारीगर, शहद का छत्ता निकालता हुआ आदमी,



चित्र 4: खुशियों का विक्रेता

पानी के नल पर औरतों की कतार वगैरह। इन फोटोग्राफ में गाँव के लोगों और उनके कामकाज और उनसे जुड़े औज़ारों की झलक मिलती है। औज़ार और मशीनें इनकी तस्वीरों में काफी अहम जगह रखते हैं — मज़दूर के औज़ार से लदी साइकिल, मज़दूरों से लदा ट्रैक्टर, खेत जोतने की मशीन, खेती के औज़ार बेचती महिला (चित्र 2)। लोगों के अलावा फोटोग्राफ में गाँव के दूसरे रहवासी भी हैं। जैसे कि मकड़ी, ततैया, बकरियाँ, चूज़े, मेंढक, गिरगिट और चींटियाँ! गाँव के लोगों का इनसे एक गहरा रिश्ता है। उनकी ज़िन्दगियाँ एक-दूसरे से बँधी हैं, कुछ काम के ज़रिए और कुछ प्रेम के सहारे (चित्र 3 व 5)। ये फोटोग्राफ्स बताते हैं कि राजू भाई की नज़र में कोई भी छोटा या मामूली नहीं। सब खास हैं।

राजू भाई की पहल

राजू भाई अक्सर इन फोटोग्राफ्स से पोर्ट्रेट बनाते हैं। उनके पोर्ट्रेट के किरदार लोग तो हैं ही, पर औज़ार और जीव-जन्तु भी हैं। कभी-कभी पोर्ट्रेट में इन किरदारों का परस्पर जीवन भी झलकता है। जैसे कि चित्र 3 में एक लड़की अपनी बकरी को गोद में लिए हुए है। ध्यान दो

कि लड़की का हाथ और बकरी का शरीर लगभग एक-दूसरे में घुल-मिल गए हैं। अगर तुमने बकरी के बच्चे को उठाया है तो शायद अपने हाथ को उसके बालों में प्यार-से घुलता महसूस किया होगा!

अब चित्र 6 देखो। इसमें एक औरत अपनी तगाड़ी लिए शायद मज़दूरी के लिए चल पड़ी है। और चित्र 1 में एक औरत अपना थैला कंधे पर लटकाए शायद हाट बाज़ार की तरफ निकली है। एक और बात है इन सब चित्रों में। ऐसा लगता है कि ये सब लोग कड़ी धूप में खड़े हैं। चित्रों के सारे रंग जैसे कड़क धूप में फीके पड़ गए हों। इस चुँधियाती रौशनी के कारण किरदारों के आसपास एक सन्नाटा-सा महसूस होता है। ठीक वैसा जैसा हमें गर्मियों की तेज़ दोपहर में महसूस होता है। ऐसा लगता है जैसे यह सन्नाटा हमारा ध्यान किरदारों पर बनाए रखने में मदद करता है।

राजू भाई ने कुछ समय पहले आउट डोर प्रैक्टिस (खुले में कलाभ्यास) नाम की एक नई पहल शुरू की। वे हर रविवार अपने कलाकार दोस्तों के साथ बड़ौदा के आसपास के गाँवों में जाकर चित्र बनाते हैं। इस पहल का मकसद था चित्रकार और चित्रकारी को बन्द कमरे से निकालकर रोज़मर्रा के जीवन में ले जाना। चित्रकला अक्सर कलाकार के स्टूडियो या फिर कला वीथियों में बँधकर रह जाती है। हम-तुम में से कुछ ही लोग इन जगहों के बारे में जानते हैं या फिर कलाकृतियाँ देखने वहाँ जा पाते हैं। राजू भाई का कहना है कि ऐसे में आम लोग ना ही कला के मुख्य किरदार बन पाते हैं और ना ही उसके दर्शक। आउटडोर प्रैक्टिस के ज़रिए राजू भाई और उनके दोस्त कला को आम लोगों के बीच ले जाते हैं। जो लोग रोज़ की मेहनत और काम से वक्त नहीं निकाल पाते, वो भी अपनी मज़दूरी के बीच में से आकर चित्र बनते देख पाते



चित्र 5: रेस्क्यू



चित्र 6: अनटाइटल्ड 3, वॉटरकलर, 26 इंच x 40 इंच

हैं। इससे उनके और कलाकार के बीच बातचीत की सम्भावना बनी रहती है। साथ ही एक-दूसरे की परिस्थिति और पृष्ठभूमि को जानने, समझने और चित्रित करने की कोशिश भी जारी रहती है।

कला की दिशा

इस तरह से राजू भाई ने हमेशा से ही अपनी कला की दिशा खुद तय की है। वे अपनी कला के विषय और उसके दर्शकों के बारे में काफी सोचते हैं। राजू भाई को यकीन है कि कला आम लोगों के बारे में है और उसे आम लोगों के बीच रहना चाहिए। अपनी इस सोच को वे ऊपर बताए अलग-अलग तरीके अपनाकर आजमाते हैं। कला की दिशा का सवाल बड़ा ही अहम सवाल है। हर सदी में राजू भाई जैसे कुछ कलाकारों ने अपनी सोच पर भरोसा और अमल करके कला की दिशाएँ और उसके आयाम बदले हैं।

क्या तुमने कभी सोचा है कि तुम अपनी कला को क्या दिशा देना चाहोगे? या ऐसा कौन-सा विषय या सवाल हैं जिन्हें तुम कला के माध्यम से व्यक्त करना चाहते हो? शायद तुम भी अपनी सोच और अपनी कलाकृतियों से कला के विषयों, उसकी दिशा, उसके आयामों का दायरा और विस्तृत व गहरा बना पाओ! चलो, एक कोशिश करके देखते हैं। तुम अपने मोहल्ले के अलग-अलग पेशे के लोगों जैसे कि मोची, प्रेस वाले, सफाई कर्मचारी, सब्जी बेचने वाली महिला, डाकिया वगैरह के पोर्ट्रेट बनाओ। इसके लिए शायद तुम्हें उनसे समय लेना पड़े क्योंकि वे काफी व्यस्त रहते हैं। पर बातचीत करके ज़रूर देखना, अगर उनके पास समय नहीं भी हुआ तो तुम्हारे नए दोस्त तो बन ही जाएँगे! इन पोर्ट्रेट का एक एल्बम बनाकर तुम चकमक को भेज सकते हो।

सभी पेंटिंग्स व फोटो: राजू पटेल



नदी के पास होना अच्छा लगता है। इन्सान ने जब पहले-पहले पानी देखा होगा तो कैसा देखा होगा? बारिश देखी होगी? बहता हुआ पानी देखा होगा या ठहरा हुआ? ठहरे हुए पानी में पानी कितना बड़ा दिखा होगा? पूरे पोखर को एक पानी की तरह देखा होगा? बहते हुए पानी का तो ओर-छोर ही नहीं दिखा होगा। क्या पता कोई इन्सान थोड़ी देर नदी के पास ठहर गया हो कि एक बार वो पूरी निकल जाएगी तो फिर वह उस तरफ चला जाएगा। इस बात का अचरज कितना सुन्दर होगा कि कोई चला ही जा रहा है। ...नदी के पास कोई ठहर गया होगा कि वह नदी की पूँछ देखकर ही मानेगा। इस ज़िद में वह किसी पेड़ के तले बैठा रहा होगा। जाने कितने दिन। एक नदी एक नदी नहीं है। बहुत सारी नदियाँ हैं, एक के पीछे एक। लेकिन इन्सान के इन्सान होने की कड़ी में कहीं बन्दर भी है। बन्दर के पास तो पानी की स्मृतियाँ हैं। पहले इन्सान ने जब पानी को देखा होगा तो बन्दर की स्मृतियों ने कोई हाथ बँटाया होगा? बन्दर ने जितना पानी देख लिया था, क्या इन्सान ने उससे आगे पानी को देखना शुरू किया।

आज कितने शहर और गाँव और करबे नदियों के किनारे ठहरे-बसे हैं। नदी देखने के अचरज को खोए हुए। नदी के पास जाकर सोचता हूँ कि कहाँ तक मुझे पानी देखा हुआ मिला है। और मैंने कहाँ से पानी देखना शुरू किया है। स्मृतियों का एक धागा मुझ तक आया है। क्या इस धागे से कोई बात पीछे भी लौटती होगी। जैसे, नदी को देखकर मुझे जो मज़ा आ रहा है वह मज़ा करोड़ों-करोड़ों साल पहले किसी चिड़िया तक पहुँच रहा होगा?...।

कल्पना के बिना जीवन असम्भव है। एक कदम आगे बढ़ाएँ तो एक कदम आगे बढ़ाने की कल्पना करनी होती है। बल्कि एक कदम आगे न बढ़ाने के लिए भी एक कदम आगे नहीं बढ़ाने की कल्पना करनी होती है।

कविताएँ कल्पना की नदी की तरह भी हैं। उनके किनारे बैठो तो वे हमें कितने-कितने ही समयों से जोड़ देती हैं। सुनो तो वे कभी-कभी सुनाती भी हैं कि हमने चीज़ों को कहाँ से देखना शुरू किया है। और कितना देखना हम लेकर पैदा हुए हैं। एक उड़ती चिड़िया को देखकर सोचता हूँ कि मुझमें चिड़िया की क्या अक्ल आई है? अक्ल के कबाड़ में से उसे साफ-सुथरा

सुशील शुक्ल

चित्र: कनक शशि

कविता डायरी-5

ऐ भाई बिजली
के तार!

करके चमकाने की कोशिश करता हूँ कि ज़रूरत के वक्त वह काम आए।

खम्भे पर बैठी चिड़िया ने यूँ ही मन में किया विचार दूर कहाँ तक जाते हो तुम ऐ भाई बिजली के तार

कवि प्रभात की यह कविता मुझे इसी ज़मीन की कविता लगती है। बिजली के खम्भे पर बैठी चिड़िया कितना आम अनुभव है। यह चिड़िया कुछ सोच रही होगी। यह चिड़िया तार पर बैठी है। यह चिड़िया तार से कुछ बात कर रही होगी। तार पर अक्सर बैठती है और कोई बात ही नहीं करती है — यह कविता इस बात को असम्भव बना देती है। बिजली के तार तुम कहाँ जाते हो भाई! जैसे कवि आज से करोड़ों साल पहले जाकर पूछ रहा है। जैसे, किसी एक इन्सान ने बहते पानी को देखकर पूछा होगा कि पानी कहाँ चले ही जाते जा रहे हो। एक कल्पना का समय जब चिड़ियाँ कुछ कहती हैं तो इन्सान समझ लेते हैं। कि वह तार से कुछ कह रही है। कोई तो समय रहा होगा जब चिड़ियाँ इन्सान से नहीं डरती होंगी। डर के अनुभवों को काटकर अलग करती है यह कविता। एक कल्पना का समय बनाती है। जहाँ पूरी सृष्टि में एक संवाद है। जहाँ बिजली के तार का भी एक स्वभाव है। उसका मन है। क्या बिजली के तार को हम बस इतना जानें कि वह बिजली ढोता है? जैसे, इसी दुनिया के लाखों लोगों को हम इसी

तरह जानते हैं। उनसे बेखबर रहते हैं। शायद ही कभी पूछते हैं कि ऐ भाई कहाँ जाते हो?

जब कोई नहीं होता। एकदम अकेला होता हूँ। घर के तमाम काम कर लेता हूँ। कभी-कभी सोचने को ही होता हूँ कि मैं आत्मनिर्भर हूँ। कि रुक जाता हूँ। बिजली के बल्ब, बिजली का पंखा, दरवाज़े, नल, पानी खोलने वाला....कोई सौ लोग आकर खड़े हो जाते हैं। उनके बिना मेरा एक दिन का एकान्त भी नामुमकिन है। मैं उन्हें नहीं पहचानता। एक दिन के भोजन से एक दिन का खून बनता है। एक बूँद खून में उस सब्जी वाले के करेले का भी हाथ है। इस तरह से एक-एक बूँद खून खोलकर देखूँ तो पाऊँगा कि इस दुनिया में हज़ारों-हज़ार लोगों से मेरा खून का रिश्ता है। एक पेड़ को देखता हूँ। वह पानी और मिट्टी और हवा को कैसे देखता है। वह सूरज की तरफ झुका रहता है। कितने ही पेड़ों को देखता हूँ कि वे असम्भव-सा सन्तुलन बनाकर सूरज की तरफ झुके रहते हैं। मिट्टी उनमें कुछ ज़्यादा पकड़ भर देती है। ...एक पेड़ अपने सब रिश्तों के साथ दिखता है।

मैं एक पंजे पर खड़े होकर कोशिश करके देखता हूँ....इतने सारे लोगों के प्रति, जीवों के प्रति, इस समूची सृष्टि के प्रति। जिस पृथ्वी पर मैं यह सोचता हूँ वह खुद झुकी है। आभार में। वहाँ जहाँ हवा भी नहीं है। पकड़ की यह बात पकड़ में नहीं आती है।

इस अद्भुत कविता के साथ रहो तो यही कुछ मन में आता है। किसी भी कविता का अर्थ उसके बाहर पैदा नहीं किया जा सकता है। कविता को निहारा जा सकता है। उसे प्रेम किया जा सकता है। यहाँ बस वही किया है।

चकमक

चित्रों के
ज़रिए गुणा
भाग - 2

आलोका कान्हेरे
अनुवाद: कविता तिवारी चित्र: मधुश्री

गणित है
मजेदार

सायरा, नीचे आजा! मैंने गुणा करने की
तेरी विधि को ट्राई करके देखा।

अच्छा, कैसे किया?

56×22 करने के लिए हमने 2×2
का वर्ग बनाया था। और इसके
इर्द-गिर्द संख्याओं को लिखा था।

	2	2
5	1	0
6	1	2

पर मैंने 36×162 किया। इसके लिए मैंने
 2×3 का आयत बनाया। और इसके इर्द-गिर्द
संख्याओं को लिखा। कुछ ऐसे...

सही बोला!

	1	6	2
3			
6			

फिर मैंने इस तरह कुछ नीली लाइनें बनाईं।

	1	6	2
3			
6			

और गुणनफलों को खानों में लिखना शुरू किया।

	1	6	2
3			0
6			1

यह कौन-से गुणनफल हैं?

समझाता हूँ।

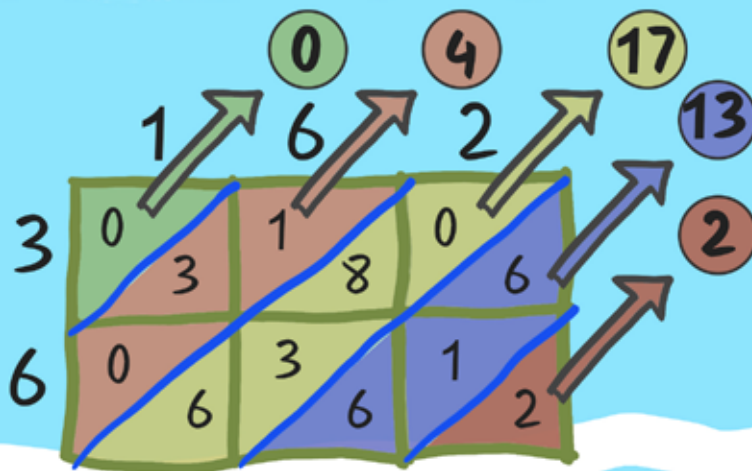
चूँकि $6 \times 2 = 12$, इसलिए मैंने 6 और 2 के सामने के खानों में 12 लिखा। इसी तरह $3 \times 2 = 6$, यानी कि 06, इसलिए मैं 3 और 2 के सामने के खानों में 06 लिखा हूँ।

ओके। और, बाकी की संख्याओं के लिए?

ये रहा बाकी की संख्याओं का गुणनफल।

	1	6	2
3	0	1	0
6	0	3	1

अब मैं इनमें से हरेक भाग में लिखी संख्याओं को जोड़ूँगा।



तो हमें यह संख्या मिली।

ओके... पर, अब इनको एक संख्या के रूप में कैसे लिखें?

बताता हूँ। यहाँ देख...

0 4 17 13 2

चूँकि 13, 10 से बड़ी संख्या है इसलिए अब हम 1 को अगली संख्या यानी 17 में जोड़ देंगे। इसी तरह हम 18 के 1 को आगे वाली संख्या में जोड़ेंगे।

0 4 17 (+1) 13 2

0 4 (+1) 18 3 2

0 5 8 3 2

तो अब हमें मिली संख्या 05832, यानी 5832

और 36×162 कितना हुआ?

5832 ही होता है। अब तू मुझे बता कि यह तरीका काम क्यों करता है।

हाँ, हाँ। मैं बताती हूँ।

	2	2
5	1	1
6	1	1

तुझे ये याद है?

हाँ। ये तो 56×22 है।

हाँ, अब इसे थोड़ा खोलकर देखते हैं।

20 + 2

50 + 6

1000	100
0	0
100	10
20	2

ये ठीक है, क्योंकि $56 = 50 + 6$ और $22 = 20 + 2$ होता है।
और $50 \times 20 = 1000$ व $20 \times 6 = 120$, जो कि $100 + 20$ है।

एक मिनट, शायद मैं समझ गया!

क्या?

गुलाबी हिस्से में सारी संख्याएँ इकाई की हैं, ग्रे हिस्से में सारी संख्याएँ दहाई की हैं। इसी तरह नीले हिस्से में सारी संख्याएँ सैकड़े की हैं, और हरे भाग में हजार की संख्याएँ हैं।

बढ़िया। तब तो तुझे ये भी समझ आ गया होगा कि हमने हासिल की संख्या को अगली संख्या में क्यों जोड़ा था।

हाँ!

ऐसा क्यों होता है, इसे विस्तार से समझने के लिए पेज 26 पर जाओ।

वेलेंटीना त्रिवेदी
चित्र: कनक शशि

जंगली

दो आदमी धूप में चलते-चलते एक पेड़ के नीचे से गुज़रे। पेड़ की छाँव की ठण्डक पाकर एक ने रुककर ऊपर देखा और बोला, “यह कौन-सा पेड़ है? दूसरे ने चलते-चलते ही एक सरसरी निगाह ऊपर डाली और कहा, “कोई जंगली पेड़ है।” पेड़ ये सुनकर खुश हुआ कि जंगल के घने, शानदार, ऊँचे-ऊँचे पेड़ों की तरह उसको माना जा रहा है। वह खुशी-से और तन गया और उसने अपनी एक सूखी पत्ती दूसरे आदमी के ऊपर गिरा दी। उसे धन्यवाद देने के लिए। आदमी ने उसे कन्धे से झटक दिया और चलता रहा। पत्ती मुस्कराती हुई पास की नाली में गिरी और पानी के बहाव में कुल्लाँचे भरते हुए आगे चल दी। अपने नए दोस्त पानी से बतियाते हुए।



कुछ देर बाद एक लड़का अपनी माँ के साथ स्कूल से लौटते हुए उसी पेड़ के नीचे से गुज़रा। माँ आगे बस स्टॉप की तरफ देख रही थीं। बच्चे की निगाह नाली के किनारे बैठे एक छोटे-से पिल्ले पर पड़ी। उसने तुरन्त एक पत्थर उठाया और फेंककर पिल्ले को मारा। पिल्ला दर्द से बिलबिला उठा। उसकी आवाज़ सुनकर माँ का ध्यान तुरन्त उधर गया। वह लड़के की तरफ देखकर गुस्से-से बोली, “तुमने उसे पत्थर मारा? जंगली कहीं के!” ऐसा कहकर उन्होंने एक चाँटा उसके गाल पर जड़ दिया।

बच्चा रोने लगा। पेड़ हैरान रह गया। तो जंगली वह होता है जो दूसरों को चोट पहुँचाता है? तो क्या ये औरत भी जंगली नहीं है? इसने भी तो अपने बेटे को चोट पहुँचाई है। भला फिर मुझे उस आदमी ने जंगली क्यों कहा था? मैंने तो किसी को चोट नहीं पहुँचाई। इन्सान सचमुच बहुत अजीब हैं।



तीसरे दिन मेरी नींद सुबह लगभग पाँच बजे खुली। हम ग्योरा गाँव में बुन्देलखण्ड के एक राजा के घर रुके थे। आँगन से रानी अम्बादेश के काम करने की आवाज़ आ रही थी। ठण्ड काफी थी। बाहर चारों ओर धुँध छाई हुई थी। कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे बादल धरती पे आ गए हों। थोड़ी देर में मोहित भी उठ गए। राजा पंचम सिंह ने हमें खाना खाकर जाने के लिए कहा। लेकिन खाने के लिए रुकते तो बहुत देर हो जाती। इसलिए हमने उसी वक्त निकलना तय किया।

नदी के किनारे का अगला गाँव बर्मा बिहार था। राजा पंचम सिंह ने बताया कि सड़क से बर्मा बिहार बहुत दूर है। यहाँ नदी का एक चैनल है। उसे नाव से पार करके आसानी से वहाँ जाया जा सकता है। क्योंकि ये एक नदी की यात्रा थी, इसलिए मैंने और मोहित ने नाव से जाने का फैसला किया। बाहर निकलते वक्त रानी अम्बादेश आई और मुझे गले से लगा लिया। उनकी आँखें भर आईं। उन्हें देखकर मुझे इस यात्रा में पहली बार अपने घर की याद आई। मेरा हाथ पकड़कर वो बोली, “बेटा अपना खयाल रखना। अपना मोबाइल नम्बर दे दो। और मुझे हर दिन खबर

करना जब तक यात्रा खतम न हो जाए।” ऐसा लगा जैसे मैं फिर से अपने घर से यात्रा शुरू कर रही हूँ। उनकी बातों में वही भाव और चिन्ता दिखाई दी, जो यात्रा के लिए निकलते वक्त मेरी माँ के चेहरे पर दिखी थी।

नाव से पार किया चैनल

योगेन्द्र जी हम लोगों को छोड़ने आए। चैनल (या बाईनाला – दो नदियों के मिलने से पहले की वो ज़मीन जिस पर नदियों का बहता पानी किनारों के ऊपर से बह जाता है) की ओर जाते हुए हमें रास्ते में बकरी चराते हुए एक बच्चा मिला। बात करते-करते वह हमारे साथ चैनल तक आ गया। नाव योगेन्द्र जी के घर की थी। लोग चैनल पार करने के लिए इस नाव का प्रयोग करते हैं, यहाँ तक कि तब भी जब पानी कम होता है। योगेन्द्र जी और बच्चे ने चप्पू उठाया और हमें बैठने के लिए कहा। कुल 10 मिनट में हमने चैनल पार कर लिया। उतरने के बाद हमने उन्हें मदद के लिए पैसे देना चाहा। लेकिन उन्होंने मना कर दिया और बोले, “किसी को मत बताना कि मैंने नाव चलाई है। अभी भी लोग हमें राजा ही मानते हैं। बेइज्जती होगी, लोग मज़ाक उड़ाएंगे।”

भाग 4

बेतवा नदी के किनारे-किनारे ग्योरा से माताटीला

आस्था चौधरी

3 दिसम्बर

रास्ता: ग्योरा - बर्मा बिहार (नाव) - झररघाट - देवगढ़ - रेलवे लेवल क्रॉसिंग (माताटीला बाँध तक मोटरसाइकिल लिफ्ट) - माताटीला माता मन्दिर



थोड़ी बातचीत के बाद वे लोग उसी नाव से वापस चले गए। उनके आँख से ओझल होने तक हम लोग वहीं खड़े रहे। मैंने ऊपर पेड़ों की ओर देखा तो वहाँ बहुत सारे खुली चोंच वाले सारस (open-billed storks) बैठे हुए थे। मैंने झट-से डायरी निकाली और वहाँ मौजूद सभी पक्षियों के नाम लिख लिए। मैं इस यात्रा के दौरान पक्षियों की विविधता भी नोट कर रही थी। थोड़ा आगे बढ़ते ही हम लोगों की मुलाकात जयपाल सिंह से हुई। उन्होंने एक झोले में अनाज लिया हुआ था। पहले मुझे लगा कि गेहूँ है, लेकिन ध्यान-से देखने पर पता चला कि वो जौ था। मैंने जौ के थोड़े दाने लिए और अपनी जैकेट में डाल लिए। सोचा घर जाकर बुन्देलखण्ड के जौ गमले में लगाऊँगी।

बुन्देलखण्ड के दो एकदम उलट रूप

कुछ दूर और चलने पर हमें एक आदिवासी टोला दिखा। पूछने पर पता चला कि गाँव अभी बहुत आगे से शुरू होता है। और निचली बिरादरी माने जाने के कारण उन्हें गाँव से दूर रहना पड़ता है। उनके टोले में घुसते ही मुझे पी साईनाथ की किताब में बुन्देलखण्ड का चित्रण याद आने लगा। ऐसी गरीबी मैंने कभी नहीं देखी थी। मैंने पढ़ा था कि गरीबी के भी बहुत स्तर होते हैं, लेकिन देखा पहली बार था। वहाँ पर एक ठीकठाक झोपड़पट्टी भी नहीं थी, बाकी सुविधाएँ तो दूर की बात है। पूछने पर पता चला कि गाँव की आशा वर्कर भी उनके यहाँ नहीं आतीं। न बच्चे पैदा होने पर और न ही कोई टीका



लगाने के लिए। बीमार पड़ने पर उन्हें तालबेहट जाना पड़ता है, जो बहुत दूर है। ज्यादातर लोग खेतों में मज़दूरी करते हैं और उसी से उनका गुज़ारा चलता है।

बर्मा बिहार पहुँचते ही एक अलग वर्ग देखने को मिला। वहाँ लोगों के पास पक्के मकान, टॉयलेट, स्कूल सब था। ये दुनिया आदिवासी टोले से एकदम अलग थी। गाँव के लोगों ने नदी के बारे में काफी बातें कीं। उन्होंने बताया कि नदी अब बहुत गन्दी हो गई है। बीना और विदिशा से बहुत ज्यादा गन्दगी आती है। 20 साल पहले वो लोग



नदी का पानी सीधे पी लिया करते थे। उस समय नदी में काई तक नहीं दिखती थी। उन्होंने यह भी बताया कि यहाँ मगरमच्छ काफी ज़्यादा हैं। और कई बार वे लोगों पर हमला भी कर चुके हैं।

बेतवा का एक नया स्वरूप

बर्मा विहार से थोड़ी दूर पर नदी का एक बड़ा घाट है। उसका नाम झरर है। ये घाट नेशनल हाईवे 44 (NH 44) के दूसरी ओर था। वहाँ पर पहली बार हम नदी का लोगों से रिश्ता देख पाए। औरतें बाल्टी में कपड़े लेकर घाट की ओर आ रही थीं। बच्चे और कुछ जवान नदी में नहा रहे थे। कुछ लोग टेंट की धुलाई कर रहे थे। वहाँ मोहित भी खुद को न रोक सके और बेतवा स्नान करने जा पहुँचे।

झरर घाट से ऊपर हाईवे पर आने पर हमें माताटीला डैम हल्का-सा दिखाई दे रहा था। नदी के बीच टापू पे एक मन्दिर भी बना हुआ था। लोग वहाँ जाने के लिए नाव ले रहे थे। वहाँ से नदी बहुत ज़्यादा बड़ी मालूम पड़ रही थी। चट्टानों और पत्थरों को चीरती बेतवा नदी किसी मैदानी नदी से एकदम अलग दिख रही थी। मैंने उसी

पल ये फैसला लिया कि मैं अब सब तरह की नदियाँ देखूँगी। और मैं नदी के बीच में पड़े पत्थरों के बीच मगरमच्छ और कछुए खोजने लगी।

डैम का सुनसान रास्ता

आगे बढ़ने पर हमने पाया कि पूरा रास्ता सुनसान होते जा रहा है। कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था। बस दूर से डैम दिखाई पड़ता और हम सोचते कि वहाँ तक पहुँचना है। ऐसा लग रहा था कि ये रास्ता खतम होने का नाम ही नहीं ले रहा है। शाम के पाँच बजे हम लोग एक रेलवे क्रॉसिंग के पास पहुँचे। अभी भी न कोई लोग दिख रहे थे, न ही रास्ता। बस अब डैम के टर्बाइन थोड़े साफ दिख रहे थे।

रेलवे लाइन पार करते ही हमें एक-दो लोग दिखे। उन्होंने बताया कि डैम अभी भी बहुत दूर है। करीब-करीब अँधेरा हो चुका था। आगे जंगल था। उनमें से एक बोले, “मैं उस तरफ जा रहा हूँ। तुम दोनों को बाइक पर जंगल पार करा देता हूँ। फिर आप डैम के पास पहुँचकर किसी से माता मालिनी मन्दिर के बारे में पूछ लेना। वहाँ लोगों के ठहरने के लिए रैन बसेरा बना हुआ है।”

मोहित ने मुझे इसके बारे में फैसला लेने को कहा। मैंने थोड़ा सोचा। लगभग 20 किमी यात्रा करने के बाद हम काफी थक चुके थे। दोनों की स्पीड को देखते हुए मैंने अन्दाज़ लगाया कि डैम तक पहुँचने में ही रात के 9 बज जाएँगे। मैंने सोचा कि हमें रात में कोई नहीं मिलेगा। हम दोनों की सुरक्षा भी तो अहम है। रिस्क न लेते हुए मैंने उन्हें जंगल पार कराने को बोला। हम लोग लगभग 3 किमी का जंगल पार कर डैम के एक साइड पहुँचे और भैया को शुक्रिया अदा कर उनसे विदा ली।

डैम पर पहुँचने तक पूरी तरह अँधेरा हो चुका था। डैम पार करते वक्त हमें चौकी पर लोग मिले। उनसे थोड़ी देर बात करने के बाद हम लोग मन्दिर की ओर बढ़े। मन्दिर डैम से काफी दूर था, लगभग 2-3 किमी। हमने सोचा अगर रुकने के लिए कोई ठिकाना नहीं मिला तो आज यहीं कहीं रात गुज़ारनी पड़ेगी। थोड़ा आगे जाकर हमें मन्दिर की घण्टी की आवाज़ सुनाई दी। हम खुश हो गए। लेकिन मन्दिर अभी भी दिखाई नहीं दे रहा था। पास ही एक चाय की दुकान थी। हमने सोचा चाय पी लेते हैं। थोड़ा अच्छा लगेगा। तभी दुकान पर अनिकेत नाम का एक लड़का आया। उसकी उम्र लगभग 20 साल होगी। उसने हम से पूछा, “आप लोग यहाँ के नहीं लगते? रास्ता भटक गए हो क्या? मैं आपकी मदद कर सकता हूँ।”

रैन बसेरे में बीती रात

हमने उसे अपनी यात्रा के बारे में बताया और मन्दिर के रैन बसेरा में रुकने की इच्छा जताई। अनिकेत हमारे साथ आया। रैन बसेरा पहुँचते ही अनिकेत हमें वहाँ खड़ा करके ऊपर महाराज से बात करने गया। उसने बताया कि कमरे तो खाली नहीं हैं, लेकिन हॉल में आप लोग ठहर सकते हैं। हॉल काफी बड़ा था। उसमें दोनों दिशाओं में बाहर जाने के दरवाज़े थे, जहाँ खूब सारे पेड़ लगे थे।

हम दोनों ने वहीं हॉल में ठहरने का फैसला लिया। जाते हुए अनिकेत ने हम से पूछा, “खाना खाया?” हमारे कुछ न बोलने पर वो अपने घर गया और थोड़ी देर बाद वापस आकर बोला, “मेरे घर चलो। आज आपका खाना मेरे यहाँ है।” मना करने पर भी वो नहीं माना और अपने घर खाने के लिए ले गया। घर पर उसके पिताजी, माँ और पत्नी थी। वहाँ पहुँचने पर पता चला कि उन्होंने हमारे लिए दुबारा खाना बनाया है। मुझे एक बार फिर से अफसोस होने लगा कि रुकने के लिए किसी जगह पहुँचने में हमने आज फिर बहुत देर कर दी।

रैन बसेरा वापस पहुँचने पर हमने देखा कि हॉल में 22 से 25 साल की उम्र का एक पण्डित बैठा हुआ था। मोहित उससे बात करने लगे। वो मोहित से हम लोगों की संस्था की वेबसाइट अपने फोन में सर्च करने को कहने लगा। मोहित ने देखा कि कैसे उसके फोन में अश्लील चित्र भरे पड़े हैं। ये देखकर वो थोड़ा सतर्क हो गए और मुझे आकर बताया। मुझे डर लगने लगा क्योंकि वो पण्डित उसी हॉल में सोने वाला था। यहाँ तक कि वाशरूम जाते हुए भी मैं मोहित को बताकर गई। मोहित ने बोला कि तुम आराम से सो जाओ मैं यहीं हूँ और जाग रहा हूँ।

मैंने स्लीपिंग बैग खोला ही था कि मेरी माँ का कॉल आया। उन्होंने मेरी खैरियत के बारे में पूछा। फोन रखते ही रानी अम्बादेश का कॉल आया। उन्होंने भी मेरी खैरियत के बारे में पूछा। स्लीपिंग बैग में घुसते वक्त मेरी नज़र उस पण्डित और मोहित पर पड़ी। एक ओर जहाँ दूर बैठी दो औरतों के खयाल मुझे लेकर एक से थे, वहीं हॉल में मेरे सामने बैठे दो आदमियों के खयाल एकदम अलग थे। इसी के साथ यात्रा का तीसरा दिन खतम हो चुका था।



अगला चरण: बीघा से रिरखना

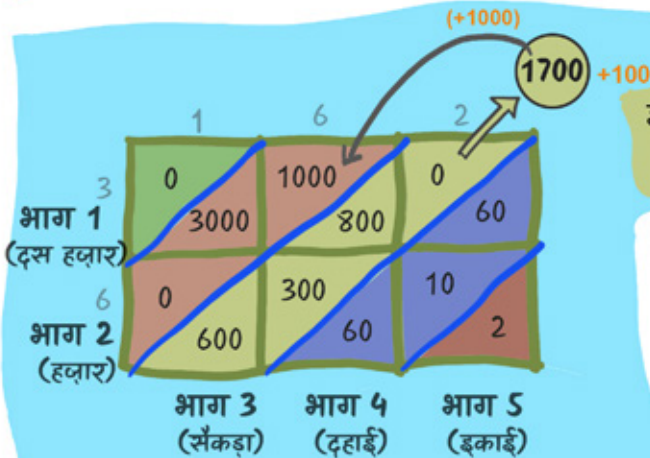


भाग 5 में केवल 2 है।

भाग 4 में $6 + 1 + 6 = 13$

13 दहाई = 130 जो कि $100 + 30$ के बराबर है।

इसलिए हम सैकड़े की संख्या 1 (वास्तव में 100) को भाग 3 में जोड़ते हैं और 30 को यहीं रखते हैं।



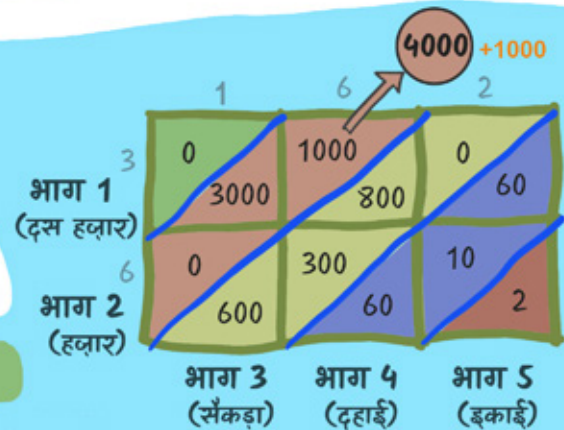
इसी तरह भाग 3 में $6 + 3 + 8 = 17$, यानी कि 1700 है। यह $1000 + 700$ के बराबर है।

पर चूँकि हमारे पास हासिल का 1 सैकड़ा है तो उसे हम 1700 में जोड़ देते हैं। तो यह 1800 हो गया। अब हम 800 को यहाँ रखते हैं और 1 (वास्तव में 1000) को हजार वाले भाग में जोड़ देते हैं।

भाग 2 में $0 + 3 + 1 = 4$, यानी कि 4000 है।

चूँकि हमारे पास हासिल का 1 हजार है तो उसे हम 4000 में जोड़ देते हैं। अब यह 5000 हो गया।

और यहाँ भाग 1 में केवल 0 है।





खाई है तो खाई है

वीरिन्द्र दुबे

चित्र: प्रोइति राँय

अब इसमें क्या बात
छुपाने की
खाई है तो खाई है
खिचड़ी साबूदाने की।
नारियल की चटनी खाई
खाई खीर मखाने की
उस पर खाए दाल-बाफले
और डाँट फिर नानी की।
इसमें क्या बात छुपाने की

३६

क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का
हमारा सवाल था—

तुम्हारे घर का कचरा कहाँ जाता है?
हमारे इलाकों में कचरा हर जगह
दिखता है। ऐसा क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे
हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते
हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें
अपने जवाब लिख भेजना।

अगले अंक के लिए सवाल है—
हम सभी किसी न किसी
तरह की मान्यता में यकीन
करते हैं। इनमें से कुछ
मान्यताओं को अंधविश्वास
भी कह सकते हैं। क्या तुम
भी किसी तरह की मान्यता
में यकीन करते हो? क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/
कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।
जवाब तुम हमें
merapanna.chakmak@eklavya.
in पर ईमेल कर सकते हो या फिर
9753011077 पर वॉट्सऐप भी कर
सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते
हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी,
फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

मेरे घर से कूड़ा कूड़े वाली गाड़ी में जाता है। जब भी मैं घूमने जाती हूँ
तो मैं एक पॉलीथीन में कूड़ा रखती हूँ। मैं कूड़ा रोड पर नहीं फेंकती हूँ।
पता नहीं लोग लोग रोड पर कूड़ा क्यों फेंकते हैं और गन्दगी फैलाते हैं।

देविका बिधुरी, दूसरी 'बी', दि हेरिटेज स्कूल, वसन्त कुंज, दिल्ली

पिछले एक साल से हम अपने घर को ज़ीरो प्लास्टिक वेस्ट हाउस बनाने
की कोशिश कर रहे हैं। इसके लिए हमारे रसोईघर के पास एक डस्टबिन
है। इसमें मम्मी फलों-सब्जियों के छिलके, गोभी-धनिया का ठण्डल आदि
ऑर्गेनिक वेस्ट एकत्र करती है। इसे या तो गाय को दे देते हैं या फिर
घर के पीछे बने गड्ढे में डाल देते हैं।

हम लोग बाज़ार से सामान थैले में न लेकर कपड़े के बने झोले में लाते
हैं। टॉफी, बिस्कुट, भुजिया आदि के रैपर्स को कोल्ड-ड्रिंक की बोतल में
ढूँसकर रख दिया जाता है। ऐसी कई बोतलें हमारी छत पर रखे ड्रम में
इकट्ठा हो गई हैं। पापा कह रहे थे कि हम इससे बाहर का फर्श बनाएँगे।

द्युति, चौथी, फातिमा स्कूल, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश



चित्र: खुशबू, दसवीं, माता भगवन्ती चट्टा निकेतन, नोएडा, उत्तर प्रदेश

घर का कचरा



कचरा सही ढंग से प्रबंधित नहीं होने के कई कारण हैं, जैसे कि जनसंख्या के बढ़ जाने से अधिक कचरा उत्पन्न होना, नकारात्मक लोगों के द्वारा कचरा फेंकने की बुरी आदतें, सामाजिक जागरूकता की कमी, और सरकार की अधिकारिक तरीके से कचरा न उठाने की स्थितियों का सामना करना।

इस समस्या को सुलझाने के लिए हमें कचरा निष्कर्षण की तकनीकों का सही ढंग से उपयोग करना चाहिए, साथ ही सामाजिक जागरूकता बढ़ानी चाहिए ताकि लोग अपने कचरे को सही तरीके से निष्कर्षित करें और इसे पुनः प्रयोजनीय रूप में बदल सकें।

चित्र: शिवम वर्मा, बारहवीं, माता भगवन्ती चट्टा निकेतन, नोएडा, उत्तर प्रदेश

हमारे घरों का कचरा विघटन के लिए नगर-निगम द्वारा भेजा जाता है। किन्तु कुछ स्थानों पर कूड़ा फेंकने का कोई इन्तजाम नहीं है। इसलिए कचरा जगह-जगह दिखाई देता है। और यहाँ लोग आते-जाते कहीं भी कूड़ा फेंक देते हैं। इसके लिए हम खुद भी ज़िम्मेदार हैं। यह हमारे शहर की प्राकृतिक सुन्दरता को भी नष्ट करता है।

अंशू, सातवीं, विश्वास स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

कुछ भी खाओ, सड़क पर डाल दो। यही होता है। सब अपना घर साफ रखते हैं और घर का कचरा बाहर फेंक देते हैं। हमारे घर का कचरा तो एक गड्ढे में डाला जाता है फिर उसे जला देते हैं। जलाने पर भी धुआँ होता है। प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है। हमारे आसपास कचरा ही कचरा है। लोग सोचते हैं हमें क्या? हमारा कौन कुछ बिगाड़ेगा? यही सोच है।

सलोनी नेगी, नौवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, केवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

हम दिल्ली के न्यू अशोक नगर इलाके में रहते हैं। वहाँ ठीक सुबह 7 बजे कूड़ा-कचरा उठाने के लिए नगर पालिका की गाड़ी आती है। यह गाड़ी गाना बजाते हुए आती है। गाने की आवाज़ सुनकर सब मोहल्ले वाले कूड़ा लेकर नीचे पहुँच जाते हैं। जैसे ही गाड़ी उनके सामने से जाती है लोग अपना कूड़ा गाड़ी में डाल देते हैं।

यह गाड़ी नगर पालिका को डम्पिंग स्थल पर जाती है। वहाँ गीले कचड़े जैसे फल व सब्जी के छिलके आदि को सूखे कचड़े से अलग किया जाता है। गीले कचड़े से खाद तैयार की जाती है और सूखे कचड़े व प्लास्टिक आदि को इससे भी बड़े डम्पिंग स्थल पर भेजा जाता है।

दिल्ली में ऐसे बड़े-बड़े डम्पिंग स्थल मौजूद हैं। परन्तु बहुत सालों से इनमें कूड़ा डालने की वजह से जगह की कमी हो गई है। इसलिए

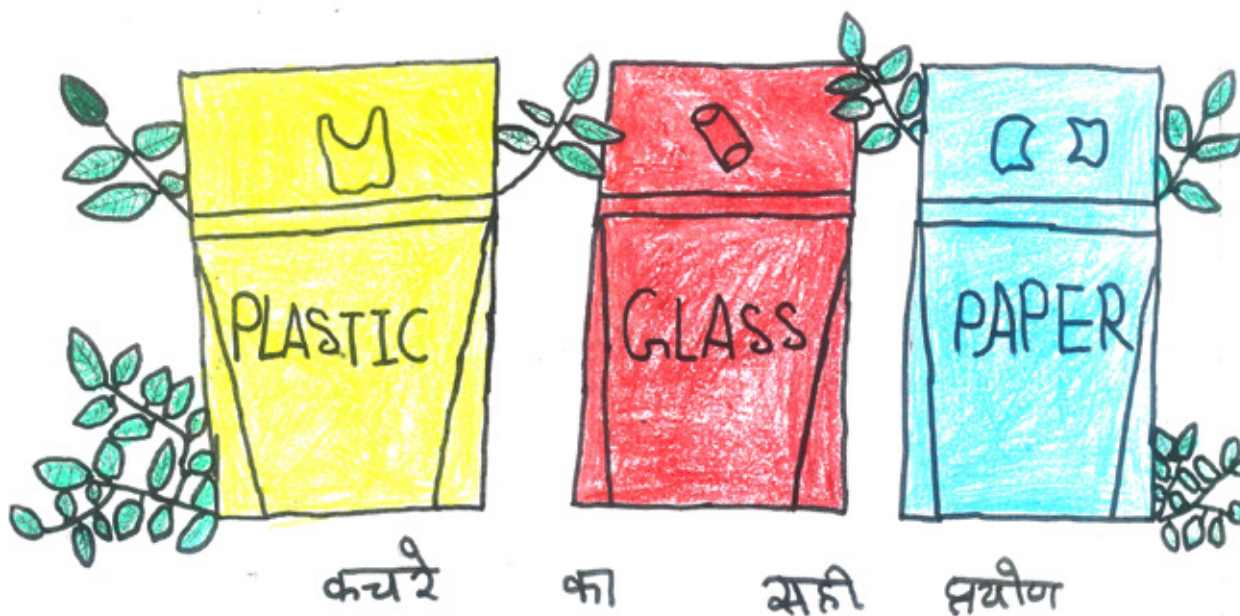
दिल्ली में कूड़े के पहाड़ देखने को मिल जाते हैं। इससे आसपास के इलाके में रहने वालों को काफी परेशानियाँ होती हैं।

दिल्ली में नगर पालिका की सुविधा के कारण काफी सुधार आया है। परन्तु फिर भी हमें बहुत सारी जगहों पर कचरा देखने को मिलता है। इसका मुख्य कारण लोग हैं। लोगों की आदत है कुछ भी खाया-पिया तो आसपास की खाली जगह में कूड़ा फेंक दिया। थोड़ा-सा कचरा देखकर दूसरे लोग भी वहाँ कूड़ा डाल देते हैं। इस तरह धीरे-धीरे वहाँ कूड़ा इकट्ठा होता जाता है। दूसरा कारण यह है कि सरकार की व्यवस्था भी कमज़ोर है। क्योंकि सरकार जगह-जगह कूड़ादान लगाने में असमर्थ रही है। और साफ-सफाई करने वाले कर्मचारी भी रोज़ नहीं आते हैं।

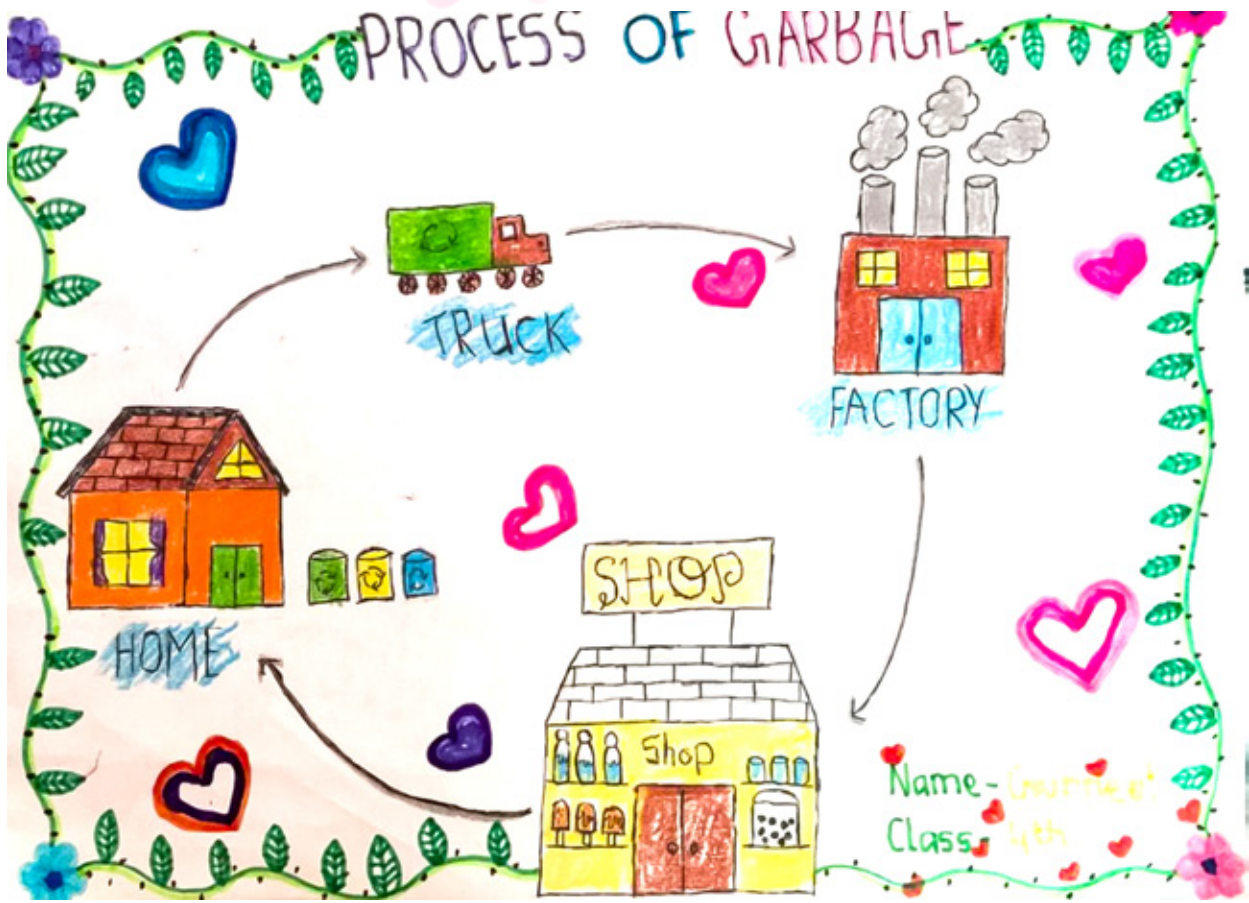
आकाश पंवार, बारहवीं, माता भगवन्ती चट्टा निकेतन, नोएडा, उत्तर प्रदेश

वैसे तो हमारे घर का सारा कचरा कचरे की गाड़ी में ही जाता है। लेकिन मेरे इलाके में कोई-कोई महापुरुष और महिलाएँ कचरा बाहर ही फेंकते हैं। क्योंकि वह इतना लेट उठते हैं कि कचरे की गाड़ी निकल जाती है। और फिर उनके घर का कचरा किसी खाली मैदान में जाता है।

अभय सिंह गौर, छठवीं, ऑक्सफोर्ड कान्वेंट स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश



चित्र: अशरफ, आठवीं, विश्वास विद्यालय, गुरुग्राम, हरयाणा



चित्र: गुरनीत कौर, चौथी, लॉर्ड कृष्णा इंटरनेशनल स्कूल, कपूरथला, पंजाब

हम लोग अपने घर का कचरा घर के बाहर फेंक देते हैं। कूड़ेदान हैं लेकिन हम वहाँ तक जाते ही नहीं। सामने सब लोग अपने-अपने घर का कचरा फेंक देते हैं तो हम भी वहीं डाल देते हैं। वह जगह बहुत ही गन्दी है। और ऐसी गन्दगी हर गली के नुक्कड़ पर है। ग्राम पंचायत वाले कुछ कचरा गाँव के बाहर फेंक देते हैं। पर सिर्फ कूड़ेदान वाला। लोग गन्दगी फैलाते हैं और साफ कोई नहीं करता। मजे की बात तो यह है कि लोगों को कचरे से कोई प्रॉब्लम भी नहीं है।

सोनल मामीडवार, चौथी, जिला परिषद उच्च प्राथमिक विद्यालय, लोहारा, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

हमारे घर का अधिकतर कचरा मुर्गी, बकरी, गाय आदि के खाने के काम में आ जाता है। रैपर, प्लास्टिक का कचरा जला दिया जाता है। यह गलत है पर कोई उपाय नहीं है। बहुत सारा कचरा हवा में उड़ता रहता है। यह हमारे खेतों को बंजर कर रहा है। पानी का गदेरा भी कबाड़ के ढेर से गन्दा हो गया है।

करन, दसवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, केवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

हमारे घर का कचरा बालटी में डालते हैं और बाद में कचरा गाड़ी में डालते हैं। हमारे इलाके में सूखा कचरा नीले डिब्बे में और गीला कचरा हरे डिब्बे में डालते हैं। प्लास्टिक का कचरा पीले डिब्बे में और काँच का कचरा काले डिब्बे में डालते हैं और वह पूरा कचरा खेतों में जाता है।

दीपिका चौहान, चौथी, माधव विद्या मन्दिर, देवास, मध्य प्रदेश





बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

1		2	3		4	5		6
7			8					
		9			10			
11	12						13	
			14	15				
16		17				18		19
	20		21					
22					23		24	
		25					26	

सुडोकू 70

	6	9		1	3	8		
	5	8	4			6	1	
4		1	6	7	8		5	
8					9	5	4	2
	9	5	3					
1	2		8		7	3	9	6
			9		6		2	8
3	4		7					5
9		6	2			1		

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो।

पहेली चित्र



अमन मदान

चित्र: कनक शशि

गुट-सोच और सही सोच

सभी इन्सानों को समूहों और गुटों में रहना अच्छा लगता है। इस से बहुत प्यार मिलता है और सुरक्षा भी। मगर कई बार गुट हमारी सोच को संकीर्ण भी बना सकते हैं। अपने गुट के खिलाफ बात करना मुश्किल होता है। लेकिन कभी-कभी ऐसा करना ज़रूरी भी होता है।

स्कूल में रवि और उसके चार दोस्तों का एक समूह था। वे सब रोज़ साथ मिलकर खेलते और खाते थे। साथ में रहकर उन सबको बहुत अच्छा लगता था।

एक दिन पाँचों दोस्त हाथों में हाथ डालकर घूम रहे थे। रवि ने कहा, “मुझे तुम सब के साथ रहकर बहुत अच्छा लगता है।” बाकी दोस्त भी बोले, “हाँ, मुझे भी अच्छा लगता है।” “और मुझे भी!” “हाँ, मुझे भी ऐसा ही लगता है!” और सभी एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराने लगे।

उनमें से सबसे छोटा था सुरेश। उसने कहा, “कुछ बदमाश बच्चे मुझ तंग किया करते थे। जब वह हमें साथ में घूमते देखते हैं, तो उनमें मुझे तंग करने की हिम्मत नहीं होती।” यह सुनकर

दोस्तों के समूह में जैसे आग लग गई। अपने समूह के सदस्य को बचाए रखना तो उनकी परम ज़िम्मेदारी थी। कोई उनके समूह के सदस्य को कैसे तंग कर सकता है!

“कौन हैं वो, ज़रा बताना तो सही। हम अभी ठीक करते हैं,” रवि बोला।

“वो लोग तो अभी यहाँ नहीं हैं। मगर वो देखो, उनमें से एक का भाई वहाँ खड़ा है,” सुरेश बोला।

“चलो, उसको देख लेते हैं!” उनमें से कोई एक चिल्लाया। और सभी उस लड़के की तरफ बढ़ने लगे।

रवि को यह ठीक नहीं लगा। आखिर उस लड़के ने तो उनका कुछ नहीं बिगाड़ा था। लेकिन रवि को

लगा कि अगर वह कुछ बोलेगा तो सारे दोस्तों की नज़रों में गिर जाएगा। सब उसे चिढ़ाएँगे। रवि के लिए दोस्तों का प्यार और सम्मान बहुत ज़रूरी था। वह उन्हें खोना नहीं चाहता था।

वह चुप रहा और सब के साथ जाकर उस अनजान लड़के के आसपास घेरा बनाकर खड़ा हो गया। सभी ने उस लड़के को ज़ोर-ज़ोर से डाँटना शुरू कर दिया। देखते ही देखते उस लड़के ने रोना शुरू कर दिया। फिर क्या होना था। हल्ला-गुल्ला सुनकर टीचर आ गई और पाँचों दोस्तों को पकड़कर ले गई।

टीचर ने पहले उनको डाँटा। फिर उन्हें प्यार-से समझाना शुरू किया।

“क्या उस लड़के ने तुम्हारा कुछ बिगाड़ा था?”

“नहीं।”

“फिर तुम उसे क्यों तंग कर रहे थे?”

बच्चों के पास कोई जवाब नहीं था। ठण्डे दिमाग से सोचने पर उन्हें यह फौरन समझ आ गया कि उस बेकसूर लड़के पर चिल्लाकर उन्होंने गलती कर दी थी।

ऐसा क्यों हो गया था?

टीचर ने समझाया, “जब हम समूह में होते हैं तो कई बार जल्दबाज़ी में निर्णय ले लेते हैं। इतने लोग बातें कर रहे होते हैं कि हमें ठीक से सोचने का समय नहीं मिलता।”

फिर उन्होंने पूछा, “क्या तुम में से किसी को नहीं लगा कि तुम गलत कर रहे हो?”

रवि ने धीरे-से हाथ उठाया, “मुझे लग रहा था...”

टीचर ने कहा, “फिर तुम कुछ बोले क्यों नहीं?”

रवि बोला, “मुझसे कुछ कहा नहीं गया। सभी एक बात कर रहे थे। मैं उससे उलट बात करता तो सब मेरे बारे में क्या सोचते?”

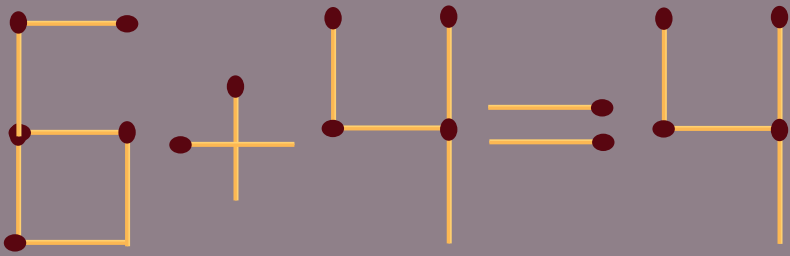
टीचर थोड़ी देर चुप रहीं और फिर बोलीं, “हाँ, समूहों के साथ अक्सर ऐसा होता है। हमें सब का साथ इतना अच्छा लगता है कि हम सब की हाँ में हाँ मिलाते रह जाते हैं। इसे समूह-सोच (group think) कहते हैं। मगर ऐसा करना हानिकारक भी हो सकता है। अगर समूह गलत दिशा में जा रहा है और हम फिर भी उसके साथ चलते रहेंगे तो क्या होगा?”

“सभी खड़के में गिर जाएँगे, जैसे हम गिर गए,” रवि मायूसी से बोला। “मैं सब को रोकने की कोशिश करता तो शायद उसके बाद वे मुझसे गुस्सा हो जाते। लेकिन सबको बचाना उनके प्यार को पाने से ज़्यादा ज़रूरी था।”

“बिलकुल सही बात,” टीचर ने कहा। “अब जाओ, बाहर जाकर खेलो!”



1. क्या तुम माचिस की केवल एक तीली को इधर-उधर करके इस समीकरण को सही बना सकते हो?



2.

1, 3, 6, 11, 18, 29, ...

इस क्रम की अगली संख्या क्या होगी?

3.

एक बस के रास्ते में 9 स्टॉप बराबर-बराबर दूरी पर हैं। यदि पहले स्टॉप से तीसरे स्टॉप की दूरी 600 मीटर हो तो पहले स्टॉप से आखिरी स्टॉप की दूरी क्या होगी?

4. तुम्हारे पास बिलकुल एक जैसे दिखने वाले 8 सिक्के हैं। पर उनमें से एक सिक्का नकली है। नकली सिक्के का वजन बाकी सिक्कों से थोड़ा ज़्यादा है। केवल 2 बार बैलेंस तराजू का इस्तेमाल करके नकली सिक्के को कैसे पहचानोगे?

5. 10 से छोटी तीन ऐसी संख्याएँ हैं जिन्हें आपस में जोड़ो या गुणा करो, जवाब में एक ही संख्या मिलती है। तुम्हें पता है वह संख्याएँ?



6.

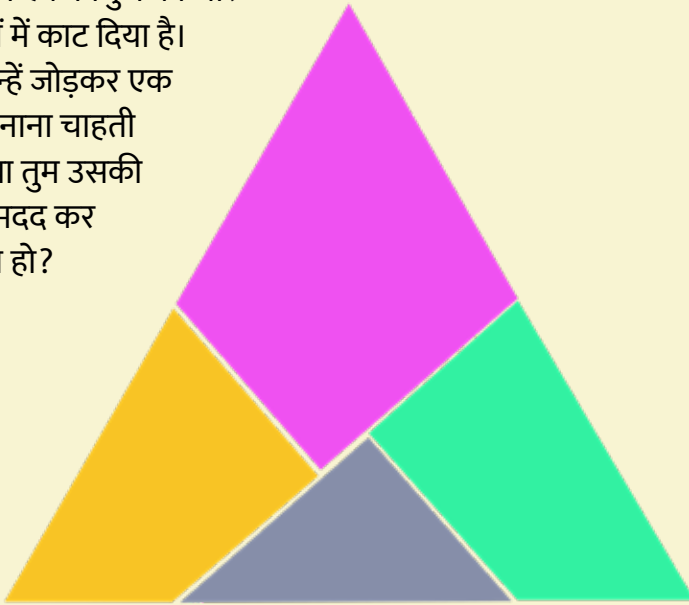
निया के पास 24 फीट लम्बा एक कपड़ा है। वह रोज 2 फीट कपड़ा काटती है। पूरे कपड़े को काटने में उसे कितने दिन लगेंगे?

दी गई ग्रिड में कई त्योहारों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

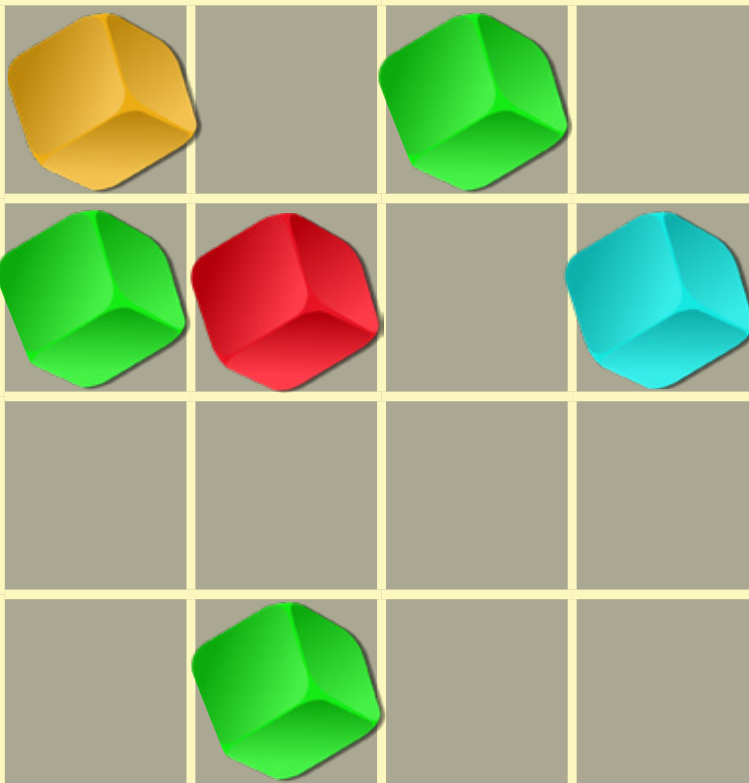
ओ	पा	क्रि	उ	बै	का	दी	ला	प
ला	ण	स	छ	बा	सा	म	वा	व
उ	द	म	बि	ठ	ल	खी	वि	ली
गा	वा	स	हु	मि	पू	लो	शु	ज
लि	क	पों	दु	र्ग	पू	जा	ह	गु
ई	द	ता	ग	फू	रु	हो	ना	डी
म	श	ला	ण	ल	त	ली	क	प
सि	ह	प	गाँ	दे	प	पो	सि	इ
ला	रा	मा	र	ई	री	म	ला	वा

सारा ने एक त्रिभुज को चार टुकड़ों में काट दिया है। वह इन्हें जोड़कर एक वर्ग बनाना चाहती है। क्या तुम उसकी कुछ मदद कर सकते हो?

7.



8. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग ब्लॉक की तस्वीर आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी तस्वीरें आएंगी?



माथा पच्ची

फटाफट बताओ

क्या है जो तुझमें है पर उसमें नहीं, झण्डे में है पर डण्डे में नहीं?

(झण्डा)

कौन-सी चीज़ है जो खाने के काम भी आती है पर पहनने के भी?

(फर्नीचर)

बिना सड़क के चलते हैं बहुत कड़क के चलते हैं रुई के गुच्छे बड़े-बड़े जिनमें रखे कई घड़े

(लड़ाकू)

अगर नाक पर मैं चढ़ जाऊँ कान पकड़कर तुम्हें पढ़ाऊँ

(नाक)

वन में कटी वन में छँटी वन में हुआ हार-शृंगार एक बार जो जल में उतरूँ फिर ना देखूँ मैं घर-बार

(छात्र)

दो अक्षर का मेरा नाम सर पर चढ़ना मेरा काम

(सिर)

जवाब पेज 42 पर



बराबरी

जया डाबी
सातवीं
देवास, मध्य प्रदेश

जब मेरी और मेरे भाई की लड़ाई होती है तो मम्मी बोलती हैं कि लड़ाई बन्द करो, नहीं तो दोनों को मारूँगी। जब भैया काम पर चला जाता है तो मैं मम्मी से बोलती हूँ कि आप हमेशा मुझे ही चुप रहने के लिए बोलती हो, भैया को कुछ नहीं बोलतीं। तो मम्मी बोलती हैं कि तू अभी छोटी है। और वह तुझसे पूरे दस साल बड़ा है। और फिर जब मैं पापा को बताती हूँ कि भैया और मुझ में बहुत बड़ी लड़ाई हुई, तो पापा कहते हैं कि तू उससे लड़ाई मत करा कर। तो मैं बोलती हूँ कि वो पहले लड़ाई शुरू करता है। तो पापा कहते हैं कि अगर लड़ाई वो पहले शुरू करे तो तू भी उसे मारा कर।



चित्र: आरवी सक्सेना, यूकेजी, सेंट अल्फोंसा इंग्लिश मीडियम स्कूल, रातेसरा, चरामा, कांकेर, छत्तीसगढ़

मेरे प्यारे 'बा'जी

सूरजभान
बारहवीं

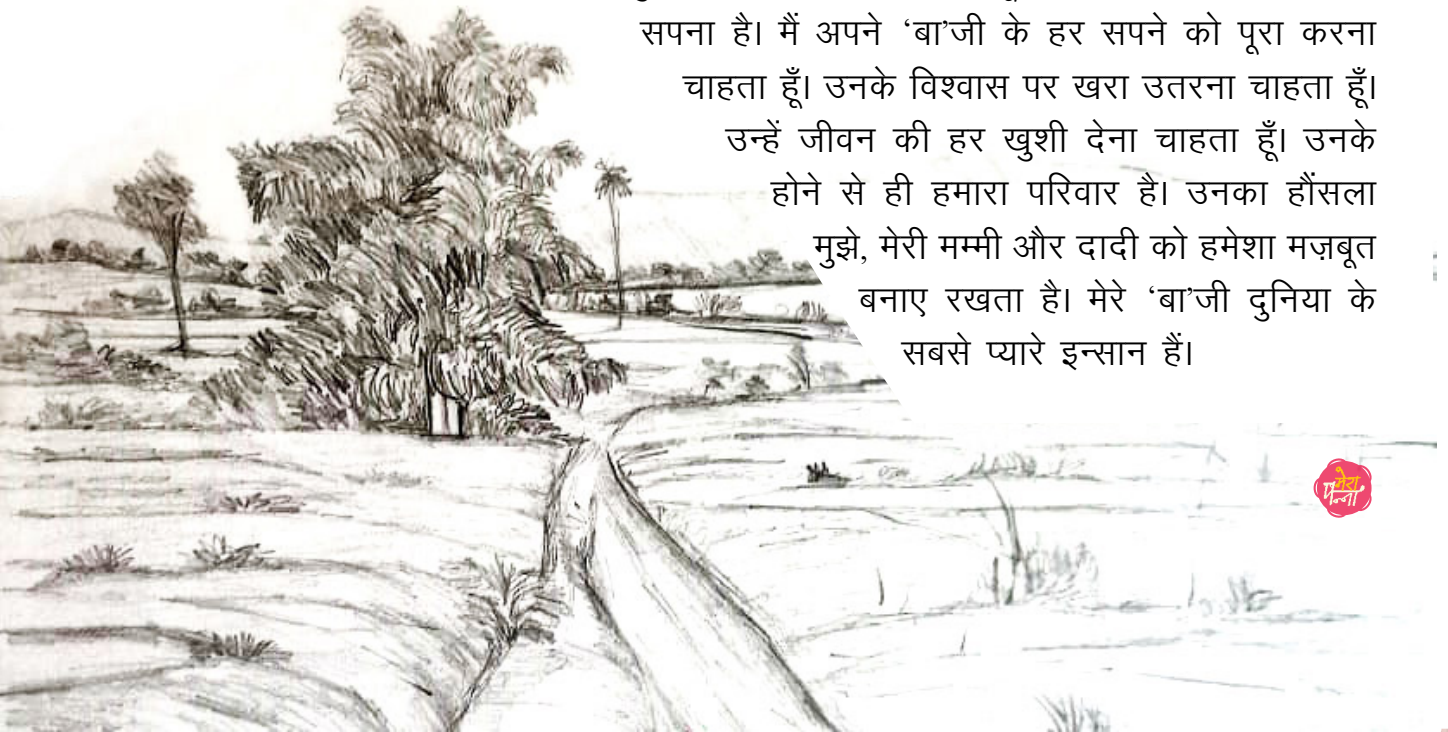
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
स्यांजी, मंडी, हिमाचल प्रदेश

मुझे मेरे दादाजी बहुत अच्छे लगते हैं। उनका नाम दुर्गादास है। वे हमारा ध्यान बहुत अच्छे-से रखते हैं। मेरे पापा नहीं हैं। लेकिन मेरे दादा मुझे मेरे पापा की याद तक नहीं आने देते! वे इतना प्यार मुझे देते हैं। मुझे दादाजी के साथ रहकर ऐसा लगता है जैसे मैं अपने पापा के साथ ही हूँ, जैसे मेरी बात मेरे पापा से हो रही है।

दादाजी हमारी सारी इच्छाएँ पूरी करते हैं। कभी-कभी गलत बात पर हमें डाँट भी पड़ती है। लेकिन मुझे कभी भी बुरा नहीं लगा। लगे भी क्यों? इतना प्यार देने वाले डाँट भी दें तो कोई बुरा क्यों मानेगा भला! मेरे दादा 74 वर्ष के हैं। मैं उन्हें प्यार से 'बा'जी कहकर बुलाता हूँ। उन्होंने हमें किसी चीज़ की कमी नहीं होने दी है। वे ठेकेदार हैं। मुझे अपने दादाजी से बात करना, उनकी सेवा करना बहुत अच्छा लगता है।

उन्होंने मुझे कभी मारा नहीं। हमेशा हँसाते हैं। अपने समय की मज़ेदार बातें सुनाते हैं। हमेशा अच्छे और बुरे का भेद समझाते हैं। 'बा'जी हमेशा कहते हैं कि पढ़ाई पर ध्यान देना। लोग कुछ भी कहें, लेकिन किसी की बात का बुरा नहीं मानना। हमेशा अपने लक्ष्य पर ध्यान देना।

मैं पुलिस में भर्ती होना चाहता हूँ क्योंकि 'बा'जी का भी यही सपना है। मैं अपने 'बा'जी के हर सपने को पूरा करना चाहता हूँ। उनके विश्वास पर खरा उतरना चाहता हूँ। उन्हें जीवन की हर खुशी देना चाहता हूँ। उनके होने से ही हमारा परिवार है। उनका हौंसला मुझे, मेरी मम्मी और दादी को हमेशा मज़बूत बनाए रखता है। मेरे 'बा'जी दुनिया के सबसे प्यारे इन्सान हैं।





धनपुतेई

आरती फर्रवाण
बारहवीं
लक्ष्मी आश्रम
कौसानी, उत्तराखण्ड

आज मैं आपको धनपुतेई के बारे में बताती हूँ। शायद आप लोग धनपुतेई के बारे में नहीं जानते होंगे। धनपुतेई बारिश के मौसम में आते हैं। हमारे गाँव में धनपुतेई बहुत आते हैं। हम बचपन से ही उनके साथ खेलते आए हैं और अभी भी खेलते हैं। मुझे वह बहुत प्रिय हैं। उनको हाथ में रखकर उड़ाना मुझे बहुत अच्छा लगता है। मन को सुकून मिलता है।

धनपुतेई की जीवन अवधि 2-3 घण्टे की होती है। वह खेतों की मिट्टी की दीवारों से बाहर निकलते हैं। और हजारों की संख्या में निकलते हैं। उनके आने की खुशी में हम बच्चे एक गीत गाते थे। गीत क्या, एक वाक्य को बार-बार दोहराते थे। वह गीत इस प्रकार है— “धनपुतेई धान दे, गोपाल इजक कान दे।”

इस वाक्य को हम सब बच्चे एक ही स्वर में बोलते थे। जब धनपुतेई आते हैं तो प्रकृति की सुन्दरता और बढ़ जाती है। इसका वर्णन करना मेरे लिए मुश्किल है।



चित्र: कृष्टि मोदी, बाल भवन, बड़ौदा, गुजरात





चित्र: कुशाग्रा वर्मा, आठ साल, डॉन बॉस्को स्कूल, हल्द्वी, नैनीताल, उत्तराखण्ड

उपहार

राधिका वर्मा
पाँचवीं
कम्पोजिट स्कूल, धुसाह
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

एक दिन मेरे मोहल्ले में चूड़ी वाला आया। मैं दौड़ते हुए मम्मी के पास गई और बोली, “आप पुरानी चूड़ियाँ पहनती हो। आज नई ले लो।” मम्मी वहाँ चूड़ी लेने गईं। वहाँ बहुत भीड़ थी। वो अच्छी-सी, मज़बूत चूड़ियाँ देखने लगीं। मम्मी ने दाम पूछा तो चूड़ी वाले ने उसका दाम 100 रुपए बताया। माँ मोल-तोल करने लगीं। तब तक मैं दूसरी आंटियों को बुला लाई। मैं भी अपने लिए चूड़ी लेने की ज़िद करने लगी।

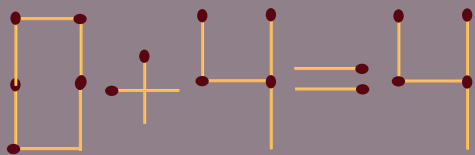
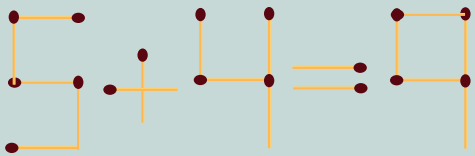
चूड़ी वाले के पास बच्चों की चूड़ियाँ नहीं बची थीं। मम्मी ने 60 रुपए में अपने लिए चूड़ियाँ खरीद लीं और मुझे बाज़ार से चूड़ी दिलाने का वादा किया। अगले ही दिन चूड़ी वाला फिर से आया। मेरे लिए चार कड़ों का सेट लाया। उसने मेरे कंगन के पैसे भी नहीं लिए। और बोला, “इस बिटिया ने मेरी बहुत चूड़ियाँ बिकवा दीं। यह उपहार है।”



माथा पच्ची जवाब

1.

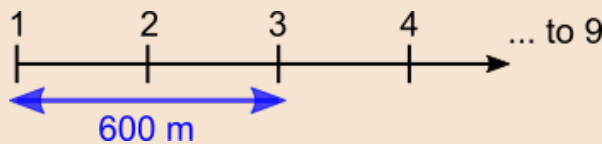
इसके दो जवाब हो सकते हैं:



2.

इस क्रम की अगली संख्या पहली वाली संख्या में क्रमागत अभाज्य संख्या (prime number) को जोड़ने से मिलती है। यानी कि $1+2=3$, $3+3=6$, $6+5=11$, $11+7=18$, $11+18=29$ । चूँकि अगली अभाज्य संख्या 13 है, इसलिए अगली संख्या $29+13=42$ होगी।

3.



पहले और तीसरे स्टॉप की दूरी 600 मीटर है। चूँकि सभी स्टॉप के बीच की दूरी बराबर है। इसलिए पहले स्टॉप से दूसरे स्टॉप की दूरी होगी 300 मीटर। पहले स्टॉप से नौवें स्टॉप के बीच में दूरियों के 8 अन्तराल हैं। इसलिए कुल दूरी होगी $300 \times 8 = 2400$ मीटर यानी कि 2.4 किलोमीटर।

4.

सिक्कों को 3, 3 व 2 के समूह में बाँट लो। तराजू के दोनों पलड़ों पर तीन-तीन सिक्के रखो। अगर तराजू सन्तुलित हुआ तो बचे हुए दो सिक्कों में से एक नकली होगा। तब उन्हें तराजू के पलड़ों पर रखकर पता कर सकते हो कि कौन-सा सिक्का नकली है। यदि तराजू सन्तुलित नहीं हुआ तो जिस पलड़े पर अधिक वजन हो उनमें से कोई भी दो सिक्के लेकर पलड़ों पर रखो। अब अगर तराजू सन्तुलित हो गया तो बचा हुआ सिक्का नकली होगा। अगर सन्तुलित नहीं हुआ तो अधिक वजन वाला सिक्का पता चल ही जाएगा।

5.

$$1 + 2 + 3 = 6$$

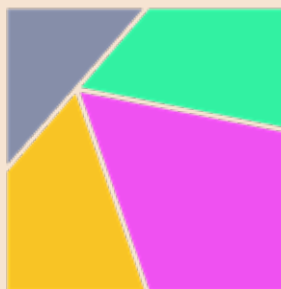
$$1 \times 2 \times 3 = 6$$

6.

11 दिन। क्योंकि ग्यारहवें दिन काटने पर उसके बाद 2 ही मीटर कपड़ा बचेगा। फिर उसे कपड़ा काटने की ज़रूरत नहीं होगी।

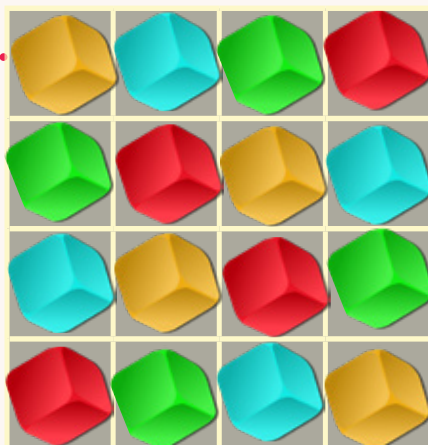
7.

8.



ओ	पा	क्रि	उ	बै	का	दी	ला	प
ला	ण	स	छ	बा	सा	म	वा	ब
उ	द	म	बि	ठ	ल	खी	वि	ली
गा	वा	स	हु	मि	पू	लो	श	ज
लि	क	पो	दु	र्गा	पू	जा	ह	गु
ई	द	ता	ग	फू	रू	हो	ना	डी
म	श	ला	ण	ल	त	ली	क	प
सि	ह	प	गों	दे	प	पो	सि	इ
ला	रा	मा	र	ई	री	म	ला	वा

9.



इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

1स	2पू	3सा	4हु	5द	6द
7ह	रा	8ल	लू	रा	र
9	9बो	घ	10प	र	वा
11ल	12म	गा	ग	13वा	न
14	पु	14भो	15ज	डी	क
16रु	मा	17ल	वा	18स	दु
19क	20ल	ट	21क	न	लू
22भो	ली	म	23वा	र	24क
नी	25म	ल	म	ल	26प

सुडोकू-70 का जवाब

2	6	9	5	1	3	8	7	4
7	5	8	4	9	2	6	1	3
4	3	1	6	7	8	2	5	9
8	7	3	1	6	9	5	4	2
6	9	5	3	2	4	7	8	1
1	2	4	8	5	7	3	9	6
5	1	7	9	3	6	4	2	8
3	4	2	7	8	1	9	6	5
9	8	6	2	4	5	1	3	7



जीवित भृंगों से बने ज़ेवर

2006 में एक फैशन डिज़ाइनर ने जीवित तिलचट्टों पर चमकीले नग चिपकाकर बिल्ले बेचना शुरू किया। कई लोगों को इससे धिन आई। लेकिन डिज़ाइनर को पता नहीं था कि सैकड़ों सालों से दक्षिण अमेरिका के कुछ भृंगों को इसी तरह छाती पर पहनाया जाता रहा है।

ज़ोफ़ेरेस कार्डिलेंसिस प्रजाति के इन सुनहरे माकेख (makech) भृंगों को ज़िन्दा पकड़कर उन पर चमकीले नग चिपकाए जाते हैं। और एक पिन व सुनहरे रंग की पतली चेन से इनको पहना जाता है। ये पहननेवाले के छाती-गर्दन पर घूमते रहते हैं। ये कई महीनों तक बिना खाना-पानी के जी सकते हैं और इसी बात का फायदा उठाया जाता है। ये पक्का पता नहीं कि यह कैसे शुरू हुआ। लेकिन इसे अब लोग क्रूर मानते हैं।

साउथ कोरिया में उम्र तय करने की परम्परा बाकी देशों से कुछ अलग है। वहाँ जब बच्चा पैदा होता है तो उसकी उम्र एक साल की मानी जाती है। और हर 1 जनवरी को उसमें एक साल जोड़ा जाता है। 1960 के दशक से सरकारी दस्तावेज़ों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मानक के मुताबिक लोग जन्म पर शून्य उम्र दर्ज करते हैं और हर जन्मदिन पर उनकी उम्र में एक साल जोड़ा जाता है। इसके बावजूद पुराने तरीके से उम्र तय करने की प्रथा जारी थी। कुछ महीनों पहले एक कानून बनाकर पुराने तरीके को खारिज कर दिया गया है। तो हो गए न इस देश के सारे नागरिक 1-2 साल जवाँ।

साउथ कोरिया के नागरिकों की उम्र अब घट गई है



तब और अब...

रोहन चक्रवर्ती

तब

वन्यजीव की फोटोग्राफी की प्रदर्शनियाँ



अब

वन्यजीव की फोटोग्राफी की प्रदर्शनियाँ



प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।

सम्पादक: विनता विश्वनाथन

